# प्रात्यक्षिक विषय विभाग

## १ कंठ शास्त्रीय संगीत

| अ.क्र. | घटक | उप घटक |
|---|---|---|
| १ | **स्वर परिचय** | १.१ शुद्ध स्वर<br>१.२ विकृत स्वर<br>१.३ अलंकार |
| २ | **राग परिचय** | २.१ राग – भूपाली<br>२.२ राग – काफी<br>२.३ राग – यमन<br>२.४ राग – अल्हैया बिलावल<br>२.५ राग – भीमपलासी<br>२.६ राग – दुर्गा |
| ३ | **ताल – परिचय** | ३.१ ताल – त्रिताल<br>३.२ ताल – झपताल<br>३.३ ताल – दादरा<br>३.४ ताल – केरवा<br>३.५ ताल – रूपक<br>३.६ ताल – द्रुत एकताल<br>**(ताल परिचय परिशिष्ट मध्ये पहावे.)** |
| ४ | **पारिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या** | ४.१ संगीत<br>४.२ ताल<br>४.३ स्वर<br>४.४ राग<br>४.५ सप्तक |
| ५ | **सादरीकरण** | अभ्यासक्रमातील रागांमध्ये<br>५.१ सरगम (कोणत्याही रागांमध्ये)<br>५.२ छोटाख्याल बंदिश<br>५.३ रागविस्तार<br>५.४ लक्षणगीत (कोणत्याही रागांमध्ये) |
| ६ | **सादरीकरण** | ६.१ जन – गण – मन<br>६.२ वंदे मातरम् |
| ७ | **स्वरलेखन** | घटक क्र. २ मधील (उपघटक २.१, २.२, २.३, २.४) कोणत्याही एका रागातील छोट्याख्यालाच्या बंदिशीचे स्वरलेखन |
| ८ | **नोंदवही** | प्रात्यक्षिकाची नोंद करणे. |

## घटक १ स्वर परिचय

**१.१ शुद्‌धस्वर :** जे स्वर आपल्या निश्चित स्थानावर कायम असतात त्यांना 'शुद्‌ध स्वर' असे म्हणतात.

**१.२ विकृतस्वर :** जे स्वर आपल्या नीयत स्थानाहून कमी किंवा अधिक उंचीवर जातात त्या स्वरांना 'विकृत स्वर' असे म्हणतात.

### १.३ अलंकार (शुद्‌ध स्वर) :

(१.३.१)

सा रे ग म प ध नी सां |

सां नि ध प म ग रे सा ||

(१.३.२)

सा

सा रे सा

सा रे ग रे सा

सा रे ग म ग रे सा

सा रे ग म प म ग रे सा

सा रे ग म प धप म ग रे सा

सा रे ग म प घ नीधपमगरेसा

सा रे ग म प ध नी सां नी ध प म ग रे सा |

(१.३.३)

सां

सां नी सां

सां नी ध नी सां

सां नी ध प ध नी सां

सां नी ध प म प ध नी सां

सां नी ध प म ग म प ध नी सां

सां नी ध  प म ग रे ग म प ध नी सां

सां नी ध प म ग रे सा रे ग म प ध नी सां |

(१.३.४) सारे, रेग, गम, मप, पध, धनी, नीसां |
सांनी, नीध, धप, पम, मग, गरे, रेसा ||

(१.३.५) सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां |
सांनिध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा ||

**अलंकार (विकृत स्वर) :**

(१.३.६) सा रे ग म प ध नि सां
सां नि ध प म ग रे सा

(१.३.७) सा रे , रेग , गम , मप , पध , धनि निसां |
सांनि , निध , धप , पम , मग , गरे , रेसा |

(१.३.८) सारेग , रेगम , गमप , मपध , पधनि धनिसां |
सांनिध , निधप , धपम , पमग , मगरे , गरेसा |

## माझा अभ्यास

**प्र. १ खालील अलंकार पूर्ण करा.**

(१) सा ग, रे म, ..................................

(२) ग रे सा, म ग रे, ..............................

## घटक २ राग परिचय

### २.१ राग – भूपाली

**दोहा –** आरोही अवरोही में सूर म–नी कीन्हे त्याग |
घ ग संवादी वादी से कहीयत भूपाली राग ||

भूपाली हा राग कल्याण थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात मध्यम आणि निषाद हे स्वर वर्ज्य आहेत, म्हणून या रागाची जाती ओडव–ओडव मानतात. या रागाचा वादी स्वर गंधार असून संवादी स्वर धैवत आहे. या रागाचा गायन समय रात्रीचा प्रथम प्रहर मानतात.

**आरोह –** सा रे ग प ध सां |

**अवरोह –**सां ध प ग रे ध़ सा |

**पकड –** ग रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग रे सा |

### २.२ राग –काफी

**दोहा :** मृदु मध्यम गंधार है, मृदु तीवर है निखाद |
काफी सुंदर राग है, सुहावत पस, वाद संवाद ||

हा राग काफी थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर कोमल लागतात तर बाकी सर्व स्वर शुद्ध आहेत. याचा वादी स्वर पंचम असून संवादी स्वर षड्ज आहे. काही लोक यात ग–नि चा संवाद करतात. या रागाची जाति संपूर्ण–संपूर्ण आहे. याचा गायन समय मध्यरात्र मानतात तर काही याचा गायन समय सायंकाळ मानतात. काफी राग हा लोकप्रिय राग आहे. सा सा, रे रे, ग ग, म म,प स्वर समुदाय गातात तेव्हा हा राग स्पष्ट दिसून येतो.

**आरोह :** सा रे, ग म, प ध, नि सां

**अवरोह :** सां नि, ध प म ग रे सा

**पकड :** सा सा, रे रे, ग ग, म म,प

### २.३ राग – यमन

**दोहा :** सबही तीवर सुर जहाँ वादी गंधार सुहाय |
अरु संवादि निखाद ते यमन राग कहाय ||

यमन राग हा कल्याण थाटातून उत्पन्न होतो. या रागाचा वादी स्वर गंधार (ग)असून संवादी स्वर निषाद (नि) आहे. या रागाची जाति संपूर्ण–संपूर्ण मानतात. या रागाचा गायन समय रात्रीचा पहिला प्रहर आहे. या रागात मध्यम (मं) तीव्र लागतो. यमन रागात जेव्हा शुद्ध मध्यम स्वराचाही प्रयोग करतात तेव्हा या रागाला यमन कल्याण म्हणतात.

**आरोह :** सा रे, ग मं प ध नि सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, मं ग, रे सा |

**पकड :** नि़ रे, ग रे सा, प मं ग, रे सा |

## २.४ राग – अल्हैया बिलावल

**दोहा :** मृदु मध्यम सब तीवर सूर मध्यम से न चढाया |
कहूँ मृदु निखाद न लगत, घ ग संवाद अल्हैया ||

अल्हैया बिलावल हा राग बिलावल थाटातून उत्पन्न होतो. या रागाची जाती षाडव संपूर्ण आहे.या रागात सर्व स्वर शुद्ध लागतात. अल्प प्रमाणात कोमल निषाद स्वर लागतो. वादी स्वर धैवत आहे तर संवादी स्वर गंधार आहे. आरोहात मध्यम स्वर वर्ज्य आहे. या रागाचा गायन समय सकाळचा प्रथम प्रहर आहे. या रागात निषाद आणि गंधार स्वराचा वक्र स्वरुपात प्रयोग केला जातो. या रागाचे आरोहात मध्यम स्वर वर्ज्य करतात व निषाद स्वर कमी प्रमाणात लावतात, या रागाला अल्हैया बिलावल असे म्हणतात. प्रचारात अल्हैया बिलावल राग अधिक प्रमाणात दिसून येतो.

**आरोह :** सा रे, ग प, ध, नि, सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, ध नि, ध प, म ग, रे सा |

**पकड :** ग रे, ग प, ध, नि सां |

## २.५ राग – भीमपलासी

**दोहा :** तिखे, रिध, कोमल गती, आरोह रिध नाही |
सम वादि संवादिते भीमपलास सोही ||

हा राग काफी थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर कोमल लागतात. याच्या आरोहात ऋषभ व धैवत वर्ज्य आहेत. या रागाची जाती ओडव संपूर्ण आहे. याचा वादी स्वर मध्यम व संवादी स्वर षड्ज आहे. गान समय दिवसाचा तिसरा प्रहर आहे.

**आरोह :** नि सा ग म, प नि सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, म ग रे सा |

**पकड :** नि सा म, म ग, प म ग रे सा |

## २.६ राग – दुर्गा

**दोहा :** सुधसुर दुरगा ओडव ग नि, बिनु सुहावै |
मध्यम खरज संवाद ध सा ध म मधुर गावै ||

दुर्गा हा राग बिलावल थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर वर्ज्य आहेत. या रागाची जाति ओडव ओडव असून याचा वादी स्वर धैवत व संवादी स्वर ऋषभ आहे.याचा गायन समय रात्रीचा दुसरा प्रहर मानतात.

या रागाचा आरोह करताना धैवतावर थांबावे व अवरोह करताना ऋषभावर थांबावे, यामुळे वादी संवादी स्वराचे संगतीने रागाचे स्वरूप शुद्ध दिसून येते. त्याच प्रमाणे या रागात वादी–संवादी या स्वरांप्रमाणेच षड्ज व पंचम स्वराचे महत्व आहे. म्हणून आलाप संपवताना या स्वरांवर देखील थांबावे.

उदा. ध म, रे प व रे प रे ध़ सा हे स्वर गाताना किंवा वाजवताना सा व म स्वरांचे महत्त्व लक्षात येते.

**आरोह :** सा रे म प, ध सां |

**अवरोह :** सां, ध, प म रे, ध़ सा |

**पकड :** म प, ध, म रे, ध़ सा |

## माझा अभ्यास

**खालील तक्ता पूर्ण करा.**

| राग | विकृत स्वर | थाट | वर्ज्य स्वर | जाती | वादी–संवादी | गानसमय | पकड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भूपाली | | | | | | | |
| काफी | | | | | | | |
| यमन | | | | | | | |
| अल्हैया बिलावल | | | | | | | |
| भीम पलासी | | | | | | | |
| दूर्गा | | | | | | | |

## घटक ४ परिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या

### ४.१ संगीत :

गायन, वादन व नृत्य या तीन कलांच्या समुदायाला ‘संगीत’ असे म्हणतात.

### ४.२ ताल :

गायन, वादन मोजण्याच्या क्रियेला ‘ताल’ असे म्हणतात.

### ४.३ स्वर :

कायम उंचीच्या, अखंड टिकणाऱ्या रंजक नादास ‘स्वर’ असे म्हणतात.

### ४.४ राग :

रंजते इति रागः स्वर आणि वर्णयुक्त रंजक रचनेस ‘राग’ असे म्हणतात.

### ४.५ सप्तक :

सात स्वरांच्या समूहास ‘सप्तक’ असे म्हणतात.

## घटक ५ सादरीकरण

### ५.१ सरगम गीत

**५.१.१ राग – भूपाली** — **ताल– त्रिताल (मध्यलय)**

**स्थायी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| सां सां ध प | ग रे सा रे | ग – प ग | ध प ग – |
| ० | ३ | × | २ |
| ग प ध सां | रें सां ध प | सां प ध प | ग रे सा – |
| ० | ३ | × | २ |

**अंतरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| ग ग प ध | प सां – सां | ध ध सां रें | गं रें सां ध |
| ० | ३ | × | २ |
| गं गं रें सां | रें सां ध प | सां सां ध प | ग रे सा – |
| ० | ३ | × | २ |

**५.२.१ छोटाख्याल राग – भुपाली** — **ताल – त्रिताल**

**स्थायी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | ध सां ध प | ग रे सा सा |
| | | इ त ना जो | ब न प र |
| | | ० | ३ |
| प ग प प | प रे ग – | ध सां ध प | ग रे सा सा |
| मा ऽ न न | क रि ये ऽ | इ त ना जो | ब न प र |
| × | २ | ० | ३ |
| प ग प प | प रे ग – | ग ग ग रे | ग प ध सां |
| मा ऽ न न | क रि ये ऽ | ड रि ये ऽ | प्र भु सों ऽ |
| × | २ | ० | ३ |
| सां ध सां सां | सांसां धप गरे सा– | | |
| आ ऽ ऽ ज | आऽ ऽऽ ऽऽ लीऽ | | |
| × | २ | | |

## अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ग | - | ग | ग | प | - | सां | ध |
| | | | | | | | | जो | ऽ | को | ई | आ | ऽ | वे | ऽ |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सां | सां | सां | - | सां | रें | सां | - | ध | - | ध | - | सां | सां | रें | रें |
| अ | प | ने | ऽ | ढिं | ग | वा | ऽ | ता | ऽ | सो | ऽ | ग | र | ब | न |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सां | रें | गं | रें | सां | (सां) | ध | प | प | ग | रे | ग | प | ध | सां | सां |
| की | ऽ | ऽ | जि | ये | ऽ | ऽ | ऽ | स | दा | ऽ | रं | ऽ | ग | य | ह |
| × | | | | २ | | | | × | | | | ३ | | | |
| प | ध | सां | सां | सांसां | धप | गरे | सा- | | | | | | | | |
| री | ऽ | ऽ | त | माऽ | ऽऽ | ऽऽ | नेऽ | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

## ५.३.१. भूपाली

**रागविस्तार :** सा (सा)ध़ (सा)ध़ सा, सा रे ध़ सा |
सा रे ग, ग ग प, ग रे गरे सा |
ग प (सां)ध (सां)ध प, ग प (सां)ध (सां)ध सां, सां ध प, ग रे ध़ सा |
ग प (सां)ध (सां)ध सां, सां रें (सां)ध सां, सां रें गं, गं रें (सां)ध सां |
ग प (सां)ध (सां)ध सां, सां रें गं, गं रें सां, सां ध प , ग रे ध़ सा

## ५.४.१ लक्षण गीत

**राग भूपाली** **ताल– त्रिताल (मध्यलय)**

### स्थायी

| | | | |
|---|---|---|---|
| – – – – | – – – – | – – – – | – – सा रे |
| ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ म नि |
| ० | ३ | × | २ |
| ग ग प रे | – सा सा रे | सा ध̣ सा रे | ग ग – – |
| ब र ज गा | ऽ य रा ऽ | ग नि क र | ज ब ऽ ऽ |
| ० | ३ | × | २ |
| ग – ग रे | ग प ध सां | ध प ग रे | ग रे सा सा |
| भो ऽ पा ऽ | लि ऽ अं ग | क ह त गु | नी ऽ स ब |
| ० | ३ | × | २ |
| सा रे सा सां | सां – (सांप) ध | सां सां ध प | ग रे सा रे |
| शु ऽ द्‌ध क | ल्या ऽ (नऽ) वि | लु म न त | ज त म नि |
| ० | ३ | × | २ |

### अंतरा

| | | | |
|---|---|---|---|
| प – ग – | प – सां ध | सां – सां सां | सां रें सां – |
| गा ऽ वा ऽ | दि ऽ अ रु | धा ऽ संऽ ऽ | वा ऽ दी ऽ |
| ० | ३ | × | २ |
| सां ध ध ध | सां सां रें रें | सां रें गं रें | सां रें सां ध |
| दे ऽ शि का | ऽ र में ऽ | अं ऽ श सु | धै ऽ व त |
| ० | ३ | × | २ |
| प ग प ध | सां – सां सां | ध प ग प | ग रे सा सा |
| रा ऽ ग वि | भा ऽ स स | ज त को ऽ | म ल ध र |
| ० | ३ | × | २ |
| सा रे सा सां | – सां (सांप) ध | सां सां ध प | ग रे सा रे |
| शा ऽ स्त्र भे | ऽ द (सऽ) म | झा ऽ य य | तु र म नी |
| ० | ३ | × | २ |

## ५.१.२ सरगम गीत

**राग –काफी** **ताल त्रिताल (मध्यलय)**

### अस्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | सा | रे | रे | ग | ग | म | म | प | – | – | म | प | ध | नी | सां |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| नी | ध | प | म | ग | ग | रे | रे | रे | प | म | प | म | ग | रे | सा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | म | प | ध | नी | नी | सां | – | रें | गं | रें | सां | नी | ध | नी | – |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| ध | ध | प | प | प | ध | प | म | प | – | – | म | प | ध | नी | सां |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| नी | ध | प | म | ग | ग | रे | रे | रे | प | म | प | म | ग | रे | सा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## ५.२.२ छोटाख्याल

**राग –काफी** **त्रिताल (मध्यलय)**

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | ध | म | प | ग | रे | म | म | प | – | प | – | म | प | ग | रे |
| श्या | ऽ | म | सुं | द | र | व | न | मा | ऽ | ली | ऽ | के | ऽ | स | खी |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| ध | ध | ध | ध | पध | नि | ध | प | म | प | ध | प | म | प | ग | रे |
| द | र | स | बि | नाऽ | ऽ | जि | य | रा | ऽ | त | र | स | र | ही | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | – | प | ध | सां | – | सां | सां | नि | सां | रें | सां | नि | ध | सां | सां |
| साँ | ऽ | व | री | सू | ऽ | र | त | मो | ऽ | ह | नी | मू | ऽ | र | त |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| प | ध | सां | रें | गं | रें | नि | ध | म | म | प | ध | सां | नि | ध | प |
| चि | त | व | न | ब | स | ग | ई | म | न | मो | ऽ | रे | ऽ | स | खी |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## ५.३.२ रागविस्तार

सा, नी ध सा , ध नि सा रे ग रे म ग रे सा |

सा रे म प ग रे , रेमप ध मपध म ग रे सा |

म प ध नि सां , नी ध सां , सां रें गं रें सां|

ध नि सां रें गं रें , गं रें नी ध सां , सां नी ध प , म ग रे सा |

## ५.४.२ लक्षणगीत

**राग –काफी** **ताल – एकताल**

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पध | मप | ग | – | रेसा | रे | ग | – | म | प | – | प |
| गुऽ | निऽ | गा | ऽ | वऽ | त | का | ऽ | फि | रा | ऽ | ग |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सां | रें | सां | नि | ध | प | ग | – | रे | सा | रे | सा |
| ख | र | ह | र | प्रि | य | मे | ऽ | ल | ज | नि | त |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सा | – | रे | रे | ग | ग | म | – | प | प | ध | ध |
| को | ऽ | म | ल | ग | नि | उ | ऽ | ज्व | ल | प | र |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| नि | सां | निसां | रें | सां | नि | ध | – | म | प | – | मप |
| सु | र | पंऽ | ऽ | च | म | वा | ऽ | दि | सा | ऽ | थऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| पध | मप | | | | | | | | | | |
| गुऽ | निऽ | | | | | | | | | | |
| × | | | | | | | | | | | |

## अंतरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | म | प | म | नि | – | सां | नि | सां | – | सां | सां |
| स | र | ल | स | रु | ऽ | प | वि | प | ऽ | श्चि | त |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| नि | सां | रें | गं | रें | सां | रें | सां | रें | नि | सां | सां |
| मा | ऽ | न | त | स | ब | सु | ध | अ | वि | क | ल |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सां | – | नि | ध | म | प | ग | ग | रे | सा | रे | नि |
| आ | ऽ | श्र | य | गु | नि | च | तु | र | क | ह | त |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सा | – | रे | रे | ग | ग | म | – | प | प | ध | ध |
| को | ऽ | म | ल | ग | नि | उ | | ज्व | ल | प | र |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| नि | सां | निसां | रें | सां | नि | ध | – | म | प | – | मप |
| सु | र | पंऽ | ऽ | च | म | वा | ऽ | दि | सा | ऽ | धऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

## ५.१.३ सरगम गीत

**राग – यमन** **ताल– त्रिताल**

### अस्थाई

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | नि़ | रे | ग | मं | प | मं | ग | रे |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| ग | – | ग | रे | ग | मं | प | – | मं | ध | प | मं | ग | – | रे | – |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| ग | – | रे | – | नि़ | रे | सा | – | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | मं | ध | मं | ग | मं | ध | नी | सां |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सां | – | सां | – | नि | रें | सां | – | नि | रें | गं | रें | सां | नी | ध | प |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| नी | ध | प | मं | ग | रे | सा | – | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

## ५.२.३ छोटाख्याल

### राग – यमन

### ताल– त्रिताल

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | प | गम॑ | नि | ध | प | – | – | रे | – | सा | ग | रे | ग | ग |
| | | अ | रीऽ | ए | ऽ | री | ऽ | ऽ | आ | ऽ | ली | पि | या | बि | न |
| | | | | ० | | | | ३ | | | | × | | | |
| – | – | प | प | ग | म॑ | ग | प | प | ध | प | प | नि | ध | प | प |
| ऽ | ऽ | स | खि | क | ल | ना | प | र | त | मो | हे | घ | री | प | ल |
| २ | | | | ० | | | | ३ | | | | × | | | |
| रे | रे | सा | सा | नि | ध | प | – | | | | | | | | |
| छि | न | दि | न | ए | ऽ | री | ऽ | | | | | | | | |
| २ | | | | ० | | | | | | | | | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | प | सां | सां | सां | – | सां | सां | सां | सां | नि | ध | नि | ध | प | प |
| ज | ब | तें | पि | या | ऽ | प | र | दे | ऽ | स | ग | व | न | की | नो |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| प | गं | रें | सां | नि | ध | प | प | ध | नि | ध | प | रे | रे | सा | सा |
| र | ति | याँ | क | ट | त | मो | हे | ता | ऽ | ऽ | रे | गि | न | गि | न |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## ५.३.३ राग विस्तार

ऩि रे , सा, ऩि ध़ ऩि ध़ प़, म़॑ ध़ ऩि सा |

ऩि रे ऩि ध़ ऩिसा, ऩि रे ग रे ग, ग रे ऩि रे सा |

ऩि रे ग म॑ प , ग म॑ ध प , ध म॑ प , म॑ ग , रे ग , ऩि रे सा|

ऩि रे ग म॑ प , ग म॑ ध नि , म॑ ध नि सां ध नि सां, सां नि ध प , म॑ ध नि सां नि ध प, ध म॑ प म॑ ग रे ग, रे सा |

ऩि रे ग म॑ ध नि सां, नि रें सां, नि रें गं, गं रें सां नि ध प, म॑ ध नि म॑ ध प म॑ ग, ऩि रे ग रे ऩि रे सा |

## ५.४.३ लक्षणगीत

### राग यमन

### ताल त्रिताल

### अस्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | प | म॑ | रे | ग | रे | सा | नि̣ | रेसा | नि | ध̣ |
| | | | | | | क | ऽ | ल्या | ऽ | ऽ | ण | रा | गिऽ | ऽ | नी |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| नि̣ | रे | ग | रे | ग | ग | म॑ | ग | प | प | प | – | ध | नीध | म॑ | प |
| अ | त | सु | ख | क | र | म | ऽ | ध्य | म | ती | ऽ | व | रऽ | अ | रू |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| रे | गरे | गम॑ | पम॑ | गरे | सा | | | | | | | | | | |
| स | बऽ | सुऽ | धऽ | सुऽ | र | | | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ग | – | ग | ग | म॑ | म॑ | ध | म॑ |
| | | | | | | | | वा | ऽ | दी | तृ | ती | य | सु | र |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सां | – | सां | नीध | नि | रें | सां | सां | नी | – | नी | ध | नि | रें | गं | रें |
| सो | ऽ | ह | मऽ | नो | ऽ | ह | र | सं | ऽ | वा | ऽ | दी | ऽ | स | ऽ |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| नी | सां | नी | ध | म॑ | ध | प | प | ग | ग | ग | रे | ग | म॑ | ध | नी |
| प्त | क | अ | त | सुं | ऽ | द | र | प्र | थ | म | प्र | ह | र | नी | स |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| म॑ध | नीध | पम॑ | गरे | सानी̣ | सा | | | | | | | | | | |
| गाऽ | ऽऽ | वऽ | तऽ | हऽ | र | | | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

## ५.१.४ सरगम गीत

### राग – अल्हैया बिलावल
### ताल – द्रुतएकताल

#### स्थायी

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सां | नि | ध | नि | सां | ऽ | सां | रें | सां | नि | ध | प |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| म | ग | म | रे | ग | म | प | ग | म | रे | सा | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| नि̣ | सा | ग | रे | सा | नि̣ | ध̣ | ध̣ | सा | – | रे | सा |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ग | म | रे | रे | ग | म | प | ग | म | रे | सा | ऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

#### अंतरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | प | ध | नि | सां | – | सां | रें | मं | रें | सां | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सां | रें | गं | मं | पं | गं | मं | रें | सां | – | रें | सां |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सां | रें | सां | नि | ध | प | ग | प | ध | नि̱ | ध | प |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| म | ग | म | रे | ग | म | प | ग | म | रे | सा | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

## ५.२.४ छोटा ख्याल
## राग अल्हैया बिलावल
## ताल त्रिताल

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | म | ग | म | नि | ध | प | मग | रेग | प | म |
| | | | | | | मो | री | अ | र | ज | सु | नोऽ | ऽऽ | गि | री |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| ग | – | रे | सा | – | सा | ग | रे | – | ग | प | प | ध | नि | सां | सां |
| धा | ऽ | री | आ | ऽ | ज | तु | म | ऽ | दि | न | दु | खी | के | स | र |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| धनि | सांरें | सांनी | धप | म | ग | | | | | | | | | | |
| ताऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽ | ज | | | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

**अंतरा**

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | ग | ऽ | ग | रे | ग | प | नीध | नी |
| | | | | | | | | आ | ऽ | यी | हूँ | अ | ब | मैंऽ | ऽ |
| | | | | | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सां | सां | सां | सां | सां | रें | सां | – | सां | रें | गं | रें | सां | – | ध | प |
| श | र | ण | ते | हा | ऽ | री | ऽ | कृ | पा | ऽ | क | रो | ऽ | म | हा |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| धनि | सांरें | सांनी | धप | म | ग | | | | | | | | | | |
| राऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽ | ज | | | | | | | | | | |
| × | | | | २ | | | | | | | | | | | |

## ५.३.४ राग विस्तार

सा नि ध नि सा , सा रे सा नि ध प, ध नि सा |

सा रे ग रे, ग प म ग रे ग, प म ग रे सा|

सा रे ग प म ग, ध नि ध प म ग, म ग म रे सा |

ग प ध नि सां, सां नि ध नि सां, सां रें गं मं पं गं मं रें सां , ध नि ध प म ग रे सा|

## ५.१.५ सरगम गीत

**राग – भीमपलासी** **ताल – झपताल (मध्यलय)**

### स्थायी

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नि | सा | म | ग | रे | सा | ऽ | प | नि | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नि | सा | म | ग | म | प | म | ग | रे | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नि | सा | म | ग | म | प | नि | प | नि | सां |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नि | ध | प | म | ग | प | म | ग | रे | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | प | म | ग | म | प | नि | प | नि | सां |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नि | सां | मं | गं | रें | सां | ऽ | नि | ध | प |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| प | रें | सां | सां | रें | नि | सां | प | नि | ध |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| प | म | ग | म | प | ग | म | ग | रे | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |

## ५.३.५ रागविस्तार

सा नि प नि सा, प नि सा ग रे सा |

नि सा ग म प, म प ग म, म ग रे सा|

ग म प, म प नि ध प, ध म प ग, म ग रे सा|

ग म प नि सां, सां नि ध प, म प नि ध प, म प ग म ग रे सा|

प नि सां, प नि सां गं रें सां, सां नि ध प, म ग रे सा|

छोटाख्याल

## ५.२.५ राग – भीमपलासी ताल – त्रिताल

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | नि | प |
| | | | | | | | | | | | | | | जा | ऽ |
| ग | – | रे | सा | रे | नि | सा | – | सा | – | म | म | म | – | नि | प |
| जा | ऽ | रे | ऽ | अ | प | ने | ऽ | मं | ऽ | दि | र | वा | ऽ | जा | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| ग | ग | रे | सा | रे | नि | सा | – | सा | – | म | म | म | – | ग | म |
| जा | ऽ | रे | ऽ | अ | प | ने | ऽ | मं | ऽ | दि | र | वा | ऽ | सु | न |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| प | नि | सां | गं | रें | – | सां | – | रें | नि | सां | प | ग | म | प | – |
| पा | ऽ | वे | ऽ | गी | ऽ | सा | ऽ | स | न | नं | दि | या | ऽ | जा | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | प | प | म | प | – | ग | म | प | प | नि | नि | सां | सां | सां | – |
| सु | न | हो | स | दा | ऽ | रं | ग | तु | म | को | चा | ह | त | है | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| नि | नि | सां | गं | रें | रें | सां | – | नि | नि | सां | सां | प | म | नि | प |
| क्या | ऽ | तु | म | ह | म | को | ऽ | छ | ल | न | दि | या | ऽ | जा | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| ग | ग | रे | सा | रे | नि | सा | – | | | | | | | | |
| जा | ऽ | रे | ऽ | अ | प | ने | ऽ | | | | | | | | |
| ० | | | | ३ | | | | | | | | | | | |

## ५.१.६ सरगम गीत
## राग – दुर्गा
## ताल – एकताल

### स्थायी

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | – | – | म | प | ध | म | रे | सा | ध̣ | सा | सा |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| रे | म | प | ध | – | म | प | म | प | ध | प | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | सां | ध | सां | – | रें | सां | ध | म | – | प | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | सां | ध | प | म | ध | प | म | रे | सा | ध̣ | सा |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | म | म | प | – | ध | सां | ध | सां | रें | सां | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | सां | रें | मं | रें | – | सां | रें | सां | ध | म | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| प | ध | – | म | प | – | रे | म | – | रे | सा | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध̣ | सा | रे | म | – | प | ध | रें | सां | ध | म | प |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

## ५.२.६ राग – दुर्गा
### ताल त्रिताल
### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | प | प | ध | म | प | – | ध | ध | – | म | म | रे | – | ध़ | सा |
| ग | ग | र | मै | ऽ | कै | ऽ | से | ले | ऽ | च | र | जा | ऽ | ऊँ | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| ध़ | सा | रे | म | प | ध | सां | सां | ध | सां | रें | सां | ध | सां | धप | म |
| बा | ऽ | ट | च | ल | त | मो | हे | रो | क | त | क | न्है | ऽ | ऽऽ | या |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | – | प | ध | सां | – | सां | सां | ध | सां | रें | सां | ध | सां | धप | म |
| सा | ऽ | स | बु | री | ऽ | मो | री | न | नं | द | ह | ठि | ऽ | लीऽ | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| म | रे | सा | प | ध | म | प | ध | सां | सां | ध | प | म | म | रे | सा |
| दे | व | रा | क | रे | ऽ | ल | र | कै | ऽ | ऽ | ऽ | या | ऽ | ऽ | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## ५.३.६ राग विस्तार

(१) सा ध़ सा, सारे म, रे, ध़ ध़ सा, सारे म प |

(२) सा रे म रे, रे प, म प, ध प, रेंरे, ध़ ध़ सा |

(३) ध़ सा रेम, रे रे, रे प, म प, ध प, ध म, रे ध़ ध़ सा |

(४) सा रे म प, ध प म प, ध ध, म म रे रे , ध़ सा, रे म प |

# ६ सादरीकरण

## ६.१ – राष्ट्रगीत

**राष्ट्रगीत**

जन गण मन–अधिनायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जन गण मंगलदायक जय हे,
भारत–भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ॥

## ६.२ वंदे मातरम

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरं ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदां वरदां मातरम् ॥ वन्दे मातरम्

### माझा अभ्यास

प्र. १ जन गण मन किती वेळात गायले जाते ?

प्र. २ वंदे मातरमचा मराठी अनुवाद समजून घ्या.

प्र. ३ अभ्यासक्रमातील रागांवर आधारीत हिंदी किंवा मराठी गीतांची यादी तयार करा.

## २ कंठ सुगम संगीत

| अ.क्र. | घटक | उप घटक |
|---|---|---|
| १ | **स्वर परिचय** | १.१ शुद्ध स्वर<br>१.२ विकृत स्वर<br>१.३ अलंकार |
| २ | **रागांची शास्त्रीय माहिती** | २.१ राग – भूपाली<br>२.२ राग – काफी<br>२.३ राग – यमन<br>२.४ राग – खमाज<br>२.५ राग – तिलंग |
| ३ | **ताल – परिचय<br>(ताल परिचय परिशिष्ट मध्ये पहावे.)** | ३.१ ताल – त्रिताल (तीनताल)<br>३.२ ताल – झपताल<br>३.३ ताल – दादरा<br>३.४ ताल – केरवा (केहरवा)<br>३.५ ताल – रूपक<br>३.६ ताल – द्रुत एकताल |
| ४ | **पारिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या** | ४.१ आरोह<br>४.२ अवरोह<br>४.३ लय<br>४.४ वादी<br>४.५ संवादी |
| ५ | **सादरीकरण** | अभ्यासक्रमातील रागांवर आधारीत<br>५.१ अभंग (कोणतेही एक)<br>५.२ नाट्यगीत (कोणतेही एक) |
| ६ | **गीतप्रकारचे सादरीकरण** | ६.१ भक्तीगीत (कोणतेही एक)<br>६.२ भावगीत / चित्रपट गीत (कोणतेही एक)<br>६.३ समूहगीत (कोणतेही एक)<br>६.४ लोकगीत (कोणतेही एक)<br>६.५ पर्यावरण गीत (कोणतेही एक) |
| ७ | **सादरीकरण** | ७.१ जन गण मन<br>७.२ वंदे मातरम् |
| ८ | **स्वरलेखन** | ८.१ अभंग स्वरलेखन<br>८.२ नाट्यगीत, स्वरलेखन यापैकी एक गीत प्रकार स्वरलिपीबद्ध करणे. |
| ९ | **नोंदवही** | प्रात्यक्षिकाची नोंद करणे. |

## घटक १ स्वर परिचय

**१.१ शुद्धस्वर :** जे स्वर आपल्या स्थानावर कायम असतात त्यांना 'शुद्ध स्वर' असे म्हणतात.

**१.२ विकृतस्वर :** जे स्वर आपल्या नीयत स्थानाहून कमी किंवा अधिक उंचीवर जातात त्या स्वरांना 'विकृत स्वर' असे म्हणतात.

### १.३ अलंकार (शुद्ध स्वर)

(१.३.१)

सा रे ग म प ध नी सां |

सां नि ध प म ग रे सा ||

(१.३.२)

सा

सा रे सा

सा रे ग रे सा

सा रे ग म ग रे सा

सा रे ग म प म ग रे सा

सा रे ग म प धप म ग रे सा

सा रे ग म प ध नी ध प म ग रे सा

सा रे ग म प ध नी सां नी ध प म ग रे सा |

(१.३.३)

सां

सां नी सां

सां नी ध नी सां

सां नी ध प ध नी सां

सां नी ध प म प ध नी सां

सां नी ध प म ग म प ध नी सां

सां नी ध प म ग रे ग म प ध नी सां

सां नी ध प म ग रे सा रे ग म प ध नी सां |

(१.३.४)

सारे, रेग, गम, मप, पध, धनी, नीसां |

सांनी, नीध, धप, पम, मग, गरे, रेसा ||

(१.३.५) सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां |

सांनिध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा ||

## अलंकार (विकृत स्वर)

(१.३.६) सा रे ग म प ध नि सां

सां नि ध प म ग रे सा

(१.३.७) सारे , रेग , गम , मप , पध , धनि निसां |

सांनि , निध , धप , पम , मग , गरे , रेसा |

(१.३.८) सारेग , रेगम , गमप , मपध , पधनि धनिसां |

सांनिध , निधप , धपम , पमग , मगरे , गरेसा |

## माझा अभ्यास

**प्र. १ खालील अलंकार पूर्ण करा.**

(१) सा ग, रे म, ..................................

(२) ग रे सा, म ग रे, ..............................

## घटक २ रागांची शास्त्रीय माहिती

### २.१ राग – भूपाली

**दोहा –** आरोही अवरोही में सूर म–नी कीन्हे त्याग |
घ ग संवादी वादी से कहीयत भूपाली राग ||

भूपाली हा राग कल्याण थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात मध्यम आणि निषाद हे स्वर वर्ज्य आहेत, म्हणून या रागाची जाती ओडव–ओडव मानतात. या रागाचा वादी स्वर गंधार असून संवादी स्वर धैवत आहे. या रागाचा गायन समय रात्रीचा प्रथम प्रहर मानतात.

**आरोह –** सा रे ग प ध सां |

**अवरोह –**सां ध प ग रे ध़ सा |

**पकड़ –** ग रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग रे सा |

### २.२ राग –काफी

**दोहा :** मृदु मध्यम गंधार है, मृदु तीवर है निखाद |
काफी सुंदर राग है, सुहावत पस, वाद संवाद ||

हा राग काफी थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर कोमल लागतात तर बाकी सर्व स्वर शुद्ध आहेत. याचा वादी स्वर पंचम असून संवादी स्वर षड्ज आहे. काही लोक यात ग–नि चा संवाद करतात. या रागाची जाति संपूर्ण–संपूर्ण आहे. याचा गायन समय मध्यरात्र मानतात तर काही याचा गायन समय सायंकाळ मानतात. काफी राग हा लोकप्रिय राग आहे. सा सा, रे रे, ग ग, म म,प स्वर समुदाय गातात तेव्हा हा राग स्पष्ट दिसून येतो.

**आरोह :** सा रे, ग म, प ध, नि सां

**अवरोह :** सां नि, ध प म ग रे सा

**पकड :** सा सा, रे रे, ग ग, म म,प

### २.३ राग – यमन

**दोहा :** सबही तीवर सुर जहाँ वादी गंधार सुहाय |
अरु संवादि निखाद ते यमन राग कहाय ||

यमन राग हा कल्याण थाटातून उत्पन्न होतो. या रागाचा वादी स्वर गंधार (ग)असून संवादी स्वर निषाद (नि) आहे. या रागाची जाति संपूर्ण–संपूर्ण मानतात. या रागाचा गायन समय रात्रीचा पहिला प्रहर आहे. या रागात मध्यम (मं) तीव्र लागतो. यमन रागात जेव्हा शुद्ध मध्यम स्वराचाही प्रयोग करतात तेव्हा या रागाला यमन कल्याण म्हणतात.

**आरोह :** सा रे, ग मं प ध नि सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, मं ग, रे सा |

**पकड :** नि़ रे, ग रे सा, प मं ग, रे सा |

## २.४ राग – खमाज

**दोहा :** चढत रिखब न लगाईये, कोमल म-नि बिराज |
ग-नि वादि संवादिते कहियत राग खमाज ||

खमाज हा राग खमाज थाटातून उत्पन्न होतो. याच्या अवरोहात निषाद (नि) कोमल व बाकी सर्व स्वर शुद्ध लागतात. वादी स्वर गंधार (ग) व संवादी स्वर निषाद (नि) आहे. याच्या आरोहात ऋषभ वर्ज्य असून याची जाती षाडव संपूर्ण आहे.

या रागाचा गायन समय रात्रीचा दुसरा प्रहर आहे. याच्या आरोहात धैवताचे विशेष महत्त्व नसते. या रागाचे वैचित्र्य ग, म, प, नि या स्वरांवर अवलंबून आहे. अवरोहात पंचम स्वर अनेक वेळा वक्र लावतात. खमाज रागामध्ये ठुमरी गाण्याचे प्रयोजन आहे. हा राग शृंगार रसप्रधान आहे.

**आरोह :** सा, गम, पध, नि, सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, म ग, रे सा |

**पकड :** नि ध, म प ध, म ग |

## २.५ राग – तिलंग

**दोहा :** ओडव कोमल मनि जहाँ धैवत रिखब न होई |
ग-नि वादि संवादिते राग तिलंग कहाई ||

तिलंग राग खमाज थाटातून उत्पन्न झाला आहे. तिलंग रागाच्या अवरोहामध्ये कोमल निषादाचा प्रयोग केला जातो. बाकी सर्व स्वर शुद्‌ध. रागाच्या आरोहामध्ये रिषभ व धैवत वर्ज्य असून अवरोहामध्ये धैवत वर्ज्य आहे. रागाची जाती ओडव-षाडव आहे. तिलंग रागाचा वादी स्वर गंधार असून संवादी स्वर निषाद आहे.

**आरोह :** नि़ सा ग म प नि सां |

**अवरोह :** सां रें सां नि प म ग म ग सा |

**पकड :** प नि सां, नि प ग म ग |

### माझा अभ्यास

**अभ्यासक्रमातील रागांवर आधारीत हिंदी- मराठी गीतांची यादी तयार करा.**

## घटक ४ परिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या

### (४.१) आरोह :

स्वरांच्या चढत्या क्रमास ‘आरोह’ असे म्हणतात.

### (४.२) अवरोह :

स्वरांच्या उतरत्या क्रमास ‘अवरोह’ असे म्हणतात.

### (४.३) लय :

दोन मात्रांच्यामधील समान अवकाशास ‘लय’ असे म्हणतात.

### (४.४) वादी :

रागातील मुख्य स्वरास ‘वादी’ असे म्हणतात.

### (४.५) संवादी :

रागातील वादी खालोखाल महत्त्वाच्या स्वरास ‘संवादी’ असे म्हणतात.

## घटक ५ सादरीकरण

### ५.१ अभंग

### राग भूपाली

ओंकार प्रधान रूप गणेशाचे | हे तिन्ही देवांचे जन्मस्थान || धृ ||

अकार तो ब्रह्मा उकार तो विष्णू | म-कार महेश जाणियेला || १ ||

ऐसे तिन्ही देव जेथोनि उत्पन्न | तो हा गजानन मायबाप || २ ||

तुका म्हणे ऐसी आहे वेदवाणी | पहावी पुराणी व्यासाचिया || ३ ||

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | - | - | सासा | धध | - | प | ग | - | गप | धप | गरे | सा | - | सा | - |
| ओं | ऽ | ऽ | कार | प्रधा | ऽ | न | ऽ | ऽ | रूऽ | ऽप | गणे | शा | ऽ | चे | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| सा | नि̣ | - | प̣ध̣ | रे | - | रे | रे | - | ग | धप | गरे | ग | - | म | - |
| हे | ऽ | ऽ | तिन्ही | दे | ऽ | वां | चे | ऽ | ज | ऽऽ | न्मऽ | स्था | ऽ | न | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| - | गप | ध | प | ध | ध | - | - | - | पप | ध | सां | प | प | - | - |
| ऽ | अका | र | तो | ब्र | ह्मा | ऽ | ऽ | ऽ | उका | र | तो | वि | ष्णू | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| - | धरें | सां | रें | ध | सां | प | - | - | गप | धप | पग | रे | - | ग | सा |
| ऽ | मका | र | म | हे | ऽ | श | ऽ | ऽ | जाऽ | ऽऽ | णि | ये | ऽ | ला | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| - | धसां | नीध | प | मग | रेग | म | - | - | ग- | पध | सांध | सां | सां | सां | - |
| ऽ | ऐऽ | सेति | न्ही | देऽ | ऽऽ | व | ऽ | ऽ | जेऽ | थुनी | ऽऽ | उ | त्प | न्न | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| - | धरें | -सां | रें- | ध- | -सां | प | - | - | गप | धप | पग | रे | - | ग | सा |
| ऽ | तोहा | ऽग | जाऽ | नऽ | ऽऽ | न | ऽ | ऽ | माऽ | ऽऽ | यऽ | बा | ऽ | प | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

तीसरे कडवे हे पहिल्या कडव्याप्रमाणेच लिहा.

## ५.२ नाट्यगीत

**राग–तिलंग** **ताल–त्रिताल**

तारिणी नववसन धारिणी।
वात्सल्य हृदयी धरूनि।
करिती दया स्वजनी ।।धृ।।
तळमळे अवघी प्रजा।
उत्सवी मग्न राजा।

साधितो शकुनि काजा
वैरि घर भरिति।
स्वर गति रमति।
प्रजाजन फिरति रानी।।१।।

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | गम | पनि | पम | पनि | सां रें | निसां |
| | | | | | | | | | | ताऽ | ऽऽ | रिऽ | णीऽ | ऽऽ | ऽऽ |
| | | | | | | | | | | | | २ | | | |
| प | सां | नि | सां | निप | ग | – | म | ग | – | – | – | – | – | नि | – |
| न | व | व | स | नऽ | धा | ऽ | रि | णी | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | वा | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| सां | – | सां | रेंसां | नि | प | ग | म | ग | – | – | – | सा | सा | ग | म |
| त्स | ऽ | ल्य | हृऽ | द | यि | ध | रु | नि | ऽ | ऽ | ऽ | क | रि | ति | द |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| प | नि | ग | म | पनि | सां रें | सांनि | पनि | सां | – | गम | पनि | पम | पनि | सां रें | निसां |
| या | ऽ | स्व | ज | नीऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽऽ | ऽ | ऽ | ताऽ | ऽऽ | रिऽ | णीऽ | ऽऽ | ऽऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | | | | ग | म |
| | | | | | | | | | | | | | | त | ळ |
| प | नि | सां | सां | नि | पनि | सां | नि | सां | – | – | – | – | – | नि | – |
| म | ळे | ऽ | अ | व | घीऽ | ऽ | प्र | जा | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | उ | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| सां | रें | – | सां | नि | प | पनि | सांनि | प | – | – | – | – | – | नि | – |
| त्स | वी | ऽ | म | ऽ | ग्न | राऽ | ऽऽ | जा | ऽ | ऽ | ऽ | – | – | सा | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| सां | रें | – | सां | सां | निप | पनि | सांनि | प | – | – | – | ग | – | सा | ग |
| धि | तो | ऽ | श | कु | निऽ | ऽऽ | काऽ | जा | ऽ | ऽ | ऽ | वै | ऽ | रि | घ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | प | नि | प | प | नि | प | नि | सां | नि | सां | सां | सां | गं | रें | मं |
| र | भ | रि | ति | स्व | ऽ | र | ग | ति | र | म | ति | प्र | जा | ऽ | ज |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| गं | रें | नि | सां | पनि | सां रें | सांनि | पनि | सां | - | गम | पनि | पम | पनि | सां रें | निसां |
| न | फि | र | ति | राऽ | ऽऽ | नीऽ | ऽऽ | ऽ | ऽ | ताऽ | ऽऽ | रिऽ | णीऽ | ऽऽ | ऽ- |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## घटक क्र. ६ गीतप्रकाराचे सादरीकरण

### ६.१ भक्तीगीत

इंद्रायणी काठी देवाची आळंदी
लागली समाधी, ज्ञानेशाची || धृ||

ज्ञानियांचा राजा भोगतो राणीव
नाचती वैष्णव, मागे पुढे || १ ||

मागेपुढे दाटे ज्ञानाचा उजेड
अंगणात झाड कैवल्याचे || २ ||

उजेडी राहिले उजेड होऊन
निवृत्ती, सोपान, मुक्ताबाई || ३ ||

### ६.३ समूहगीत

हिंद देश के निवासी, सभी जन एक है
रंग रूप वेश भाषा, चाहे अनेक है || धृ||

बेला, गुलाब, जुई, चंपा, चमेली
प्यारे प्यारे फुल गुंफे माला में एक है || १ ||

कोयल की कुक न्यारी, पपीहे की ठेर प्यारी
गा रही तराणा बुलबुल, राग मगर एक है || २ ||

गंगा, जमुना, ब्रम्हपुत्रा, कृष्णा, कावेरी
जा के मिल गई सागर में हुई सब एक है || ३ ||

### ६.२ भावगीत

आकाशी झेप घे रे पाखरा
सोडी सोन्याचा पिंजरा || धृ||
तुजभवती वैभव माया
फळ रसाळ मिळते खाया
सुखलोलुप झाली काया
हा कुठवर वेड्या घेसी आसरा || १ ||
घर कसले ही तर कारा
विषसमान मोती-चारा
मोहाचे बंधन द्वारा
तुज आडवितो हा कैसा उंबरा || २ ||
तुज पंख दिले देवाने
कर विहार सामर्थ्याने
दरी-डोंगर हिरवी राने
जा ओलांडूनी या सरिता सागरा || ३ ||
कष्टाविणं फळ ना मिळते
तुज कळते परि ना वळते
हृदयात व्यथा ही जळते
का जीव बिचारा होई बावरा || ४ ||
घामातून मोती फुलले
श्रमदेव घरी अवतरले
घर प्रसन्नतेने नटले
हा योग जीवनी आला साजिरा || ५ ||

## ६.४ लोकगीत

आधी गणाला रणी आणला
नाहीतर रंग पुन्हा सुनासुना || धृ||

धन्य शारदा, ब्रम्ह नायका,
घेऊन येईल रुद्रविणा
साही शास्त्रांचा मंत्र अस्त्रांचा
दाविल यंत्र खुणाखुणा || १ ||

नाहीतर रंग पुन्हा सुनासुना

सद्‌गुरू माझा स्वामी जगद्‌गुरू
मेरूवरचा धुरु आणाआणा
ब्रम्हांडाभोवती तो एक सवता
दिवाच लाविला म्हणाम्हणा || २ ||

नाहीतर रंग पुन्हा सुनासुना
माझ्या मनाचा मी तू पणाचा
जाळून केला चुनाचुना
पठ्ठेबापुराव कवि कवनाचा
हा एक तुकडा जुनाजुना || ३ ||

## ६.५ पर्यावरण गीत

हा नाश थांबवा भूमातेचे तन मन जळते आहे.
ही वसुंधरा जनसंख्येच्या भाराने रडत आहे || धृ ||

पृथ्वीच्या पाठीवरती अफाट झाली गर्दी
गर्दीतच जन गुदमरती; दुःखात किती तळमळती
हे संततीचे अज्ञान जगाला भेसूर छळते आहे || १ ||

या नद्या नव्हे रे गंगा संजीवन तुजला देती
तू करुनी जल अपवित्र का पाप घेतसे माथी
हे पात्र नद्यांचे सुखमय कर दुसरीकडे वळते आहे || २ ||

हा पावन निर्मल वारा, जो श्वास तुझा रे होतो
तू दूषित करुनी त्याला, विश्वास कसा गमवितो
हे दुःख अनावर धरणीला रे अविरत सलते आहे || ३ ||

ही झाडे तुजला देती रे उन्हात शीतल छाया
अन मधुर फळे पुरविती रे जीव तुझा जगवाया
ही कुऱ्हाड झाडांवरती नाही तुजवर पडते आहे || ४ ||

ही पुन्हा हसावी धरणी, पक्ष्यांनी गावी गाणी
धावे कर्तव्य म्हणूनी ही बिरादरी इन्सानी
या अभियानात समील व्हा, ज्यांना हे कळते आहे || ५ ||

## माझा अभ्यास

विविध गीत प्रकारातील गीते लक्षपूर्वक ऐका व खालील मूद्द्यांच्या आधारे त्यांची वैशिष्ट्ये समजून घ्या आणि वहीमध्ये नोंद करा.

१) काव्य विषय
२) ताल
३) साथीसाठीची वाद्ये
४) गीतप्रकाराची वैशिष्ट्ये

# ७ सादरीकरण

## राष्ट्रगीत

जन गण मन–अधिनायक जय हे
भारत–भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जन गण मंगलदायक जय हे,
भारत–भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ॥

### ७.१ राष्ट्रगीत

### ७.२ वंदे मातरम

वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरं ।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम् ।
सुखदां वरदां मातरम् ॥ वन्दे मातरम्

## माझा अभ्यास

प्र. १ जन गण मन किती वेळात गायले जाते?

प्र. २ वंदे मातरमचा मराठी अनुवाद समजून घ्या.

## ३. वाद्य संगीत (हार्मोनियम / बासरी / व्हायोलिन / सतार)

| अ.क्र. | घटक | उप घटक |
|---|---|---|
| १ | **स्वर परिचय** | १.१ शुद्ध स्वर<br>१.२ विकृत स्वर<br>१.३ अलंकार |
| २ | **रागांची शास्त्रीय माहिती** | २.१ राग – भूपाली<br>२.२ राग – काफी<br>२.३ राग – यमन<br>२.४ राग – अल्हैया बिलावल<br>२.५ राग – भीमपलासी<br>२.६ राग – दुर्गा<br>२.७ राग – पिलु |
| ३ | **ताल – परिचय (ताल परिचय परिशिष्ट मध्ये पहावे.)** | ३.१ ताल – त्रिताल<br>३.२ ताल – झपताल<br>३.३ ताल – दादरा<br>३.४ ताल – केरवा (केहरवा)<br>३.५ ताल – रूपक<br>३.६ ताल – द्रुत एकताल |
| ४ | **पारिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या** | ४.१ ठेका<br>४.२ बंदिश<br>४.३ जमजमा<br>४.४ गत<br>४.५ मसीतखानी गत<br>४.६ रजाखानी गत |
| ५ | **सादरीकरण** | ५.१ धून राग पीलू<br>५.२ रजाखानी गत (अभ्यासक्रमातील राग)<br>५.३ सरगम गीत (अभ्यासक्रमातील राग) |
| ६ | **गीतप्रकारचे सादरीकरण** | ६.१ जन – गण – मन<br>६.२ वंदे मातरम् |
| ७ | **सादरीकरण** | घटक क्र. २ मधील कोणत्याही एका रजाखानी गतीचे किंवा सरगमची गीताचे स्वरलेखन करावे. |
| ८ | **नोंदवही** | प्रात्यक्षिकाची नोंद करणे. |

## घटक १ स्वर परिचय

**१.१ शुद्धस्वर :** जे स्वर आपल्या स्थानावर कायम असतात त्यांना 'शुद्ध स्वर' असे म्हणतात.

**१.२ विकृतस्वर :** जे स्वर आपल्या नीयत स्थानाहून कमी किंवा अधिक उंचीवर जातात त्या स्वरांना 'विकृत स्वर' असे म्हणतात.

**१.३ अलंकार (शुद्ध स्वर) :**

(१.३.१)

सा रे ग म प ध नी सां |

सां नि ध प म ग रे सा ||

(१.३.२)

सा

सा रे सा

सा रे ग रे सा

सा रे ग म ग रे सा

सा रे ग म प म ग रे सा

सा रे ग म प धप म ग रे सा

सा रे ग म प ध नीधपमगरेसा

सा रे ग म प ध नी सां नी ध प म ग रे सा |

(१.३.३)

सां

सां नी सां

सां नी ध नी सां

सां नी ध प ध नी सां

सां नी ध प म प ध नी सां

सां नी ध प म ग म प ध नी सां

सां नी ध प म ग रे ग म प ध नी सां

सां नी ध प म ग रे सा रे ग म प ध नी सां |

(१.३.४)

सारे, रेग, गम, मप, पध, धनी, नीसां |

सांनी, नीध, धप, पम, मग, गरे, रेसा ||

(१.३.५) सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनी, धनीसां |

सांनिध, नीधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा ||

**अलंकार (विकृत स्वर):**

(१.३.६) सा रे ग म प ध नि सां

सां नि ध प म ग रे सा

(१.३.७) सारे , रेग , गम , मप , पध , धनि निसां |

सांनि , निध , धप , पम , मग , गरे , रेसा |

(१.३.८) सारेग , रेगम , गमप , मपध , पधनि धनिसां |

सांनिध , निधप , धपम , पमग , मगरे , गरेसा |

## माझा अभ्यास

**प्र. १ खालील अलंकार पूर्ण करा.**

(१) सा ग, रे म, ..................................

(२) ग रे सा, म ग रे, ..............................

## घटक २ रागांची शास्त्रीय माहिती

### २.१ राग – भूपाली

**दोहा –** आरोही अवरोही में सूर म-नी कीन्हे त्याग |
घ ग संवादी वादी से कहीयत भूपाली राग ||

भूपाली हा राग कल्याण थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात मध्यम आणि निषाद हे स्वर वर्ज्य आहेत, म्हणून या रागाची जाती ओडव-ओडव मानतात. या रागाचा वादी स्वर गंधार असून संवादी स्वर धैवत आहे. या रागाचा गायन समय रात्रीचा प्रथम प्रहर मानतात.

**आरोह –** सा रे ग प ध सां |

**अवरोह –** सां ध प ग रे ध़ सा |

**पकड़ –** ग रे सा ध़, सा रे ग, प ग, ध प ग रे सा |

### २.२ राग –काफी

**दोहा :** मृदु मध्यम गंधार है, मृदु तीवर है निखाद |
काफी सुंदर राग है, सुहावत पस, वाद संवाद ||

हा राग काफी थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर कोमल लागतात तर बाकी सर्व स्वर शुद्ध आहेत याचा वादी स्वर पंचम असून संवादी स्वर षड्ज आहे. काही लोक यात ग-नि चा संवाद करतात.

या रागाची जाति संपूर्ण-संपूर्ण आहे. याचा गायन समय मध्यरात्र मानतात तर काही याचा गायन समय सायंकाळ मानतात. काफी राग हा लोकप्रिय राग आहे. सा सा, रे रे, ग॒ ग॒, म म,प स्वर समुदाय गातात तेव्हा हा राग स्पष्ट दिसून येतो.

**आरोह :** सा रे, ग॒ म, प ध, नि॒ सां

**अवरोह :** सां नि॒, ध प म ग॒ रे सा

**पकड :** सा सा, रे रे, ग॒ ग॒, म म,प

### २.३ राग – यमन

**दोहा :** सबही तीवर सुर जहाँ वादी गंधार सुहाय |
अरु संवादि निखाद ते यमन राग कहाय ||

यमन राग हा कल्याण थाटातून उत्पन्न होतो. या रागाचा वादी स्वर गंधार (ग)असून संवादी स्वर निषाद (नि) आहे. या रागाची जाति संपूर्ण-संपूर्ण मानतात. या रागाचा गायन समय रात्रीचा पहिला प्रहर आहे. या रागात मध्यम (मं) तीव्र लागतो. यमन रागात जेव्हा शुद्ध मध्यम स्वराचाही प्रयोग करतात तेव्हा या रागाला यमन कल्याण म्हणतात.

**आरोह :** सा रे, ग मं प ध नि सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, मं ग, रे सा |

**पकड :** नि़ रे, ग रे सा, प मं ग, रे सा |

## २.४ राग – अल्हैया बिलावल

**दोहा :** मृदु मध्यम सब तीवर सूर मध्यम से न चढाया |
कहूँ मृदु निरवाद न लगत, घ ग संवाद अल्हैया ||

अल्हैया बिलावल हा राग बिलावल थाटातून उत्पन्न होतो. या रागाची जाती षाडव संपूर्ण आहे.या रागात सर्व स्वर शुद्ध लागतात. अल्प प्रमाणात कोमल निषाद स्वर लागतो. वादी स्वर धैवत आहे तर संवादी स्वर गंधार आहे. आरोहात मध्यम स्वर वर्ज्य आहे.

या रागाचा गायन समय सकाळचा प्रथम प्रहर आहे. या रागात निषाद आणि गंधार स्वराचा वक्र स्वरूपात प्रयोग केला जातो. या रागाचे आरोहात मध्यम स्वर वर्ज्य करतात व निषाद स्वर कमी प्रमाणात लावतात तेव्हा या रागाला अल्हैया बिलावल असे म्हणतात. प्रचारात अल्हैया बिलावल राग अधिक प्रमाणात दिसून येतो.

**आरोह :** सा रे, ग प, ध, नि, सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, ध नि, ध प, म ग, रे सा |

**पकड :** ग रे, ग प, ध, नि सां |

## २.५ राग – भीमपलासी

**दोहा :** तिखे, रिध, कोमल गती, आरोह रिध नाही |
सम वादि संवादिते भीमपलास सोही ||

हा राग काफी थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर कोमल लागतात. याच्या आरोहात ऋषभ व धैवत वर्ज्य आहेत. या रागाची जाती ओडव संपूर्ण आहे. याचा वादी स्वर मध्यम (म) संवादी स्वर षड्ज (सा) आहे. गान समय दिवसाचा तिसरा प्रहर आहे.

**आरोह :** नि सा ग म, प नि सां |

**अवरोह :** सां नि, ध प, म ग रे सा |

**पकड :** नि सा म, म ग, प म ग रे सा |

## २.६ राग – दुर्गा

**दोहा :** सुधसुर दुरगा ओडव ग नि, बिनु सुहावै |
मध्यम खरज संवाद ध सा ध म मधुर गावै ||

दुर्गा हा राग बिलावल थाटातून उत्पन्न होतो. या रागात गंधार व निषाद स्वर वर्ज्य आहेत. या रागाची जाति ओडव ओडव असून याचा वादी स्वर धैवत व संवादी स्वर ऋषभ आहे. याचा गायन समय रात्रीचा दुसरा प्रहर मानतात.

या रागाचा आरोह करताना धैवतावर थांबावे व अवरोह करताना ऋषभावर थांबावे, यामुळे वादी संवादी स्वराचे संगतीने रागाचे स्वरूप शुद्ध दिसून येते.त्याच प्रमाणे या रागात वादी-संवादी या स्वरांप्रमाणेच षड्ज व पंचम स्वरांचे महत्त्व आहे. म्हणून आलाप संपवताना या स्वरांवर देखील थांबावे. उदा. ध म, रे प व रे प रे ध़ सा हे स्वर गाताना किंवा वाजवताना सा व म स्वरांचे महत्त्व लक्षात येते.

**आरोह :** सा रे म प, ध सां | **अवरोह :** सां, ध, प म रे, ध सा | **पकड :** म प, ध, म रे, ध सा |

## २.७ राग पिलू

**दोहा :** कोमल तीवर सबहां सुर जहँ गावत लग जाई |
ग नि वादि संवादि तें पीलू राग बताई ||

हा राग काफी थाटातून उत्पन्न होतो. ह्या रागामध्ये गंधार, धैवत, निषाद स्वर कोमल व शुद्ध लागतात. पिलू रागाच्या आरोहामध्ये ऱिषभ व धैवत वर्ज्य आहेत. जाती ओडव-संपूर्ण आहे. वादी गंधार असून संवादी निषाद आहे. पिलू राग रात्रीच्या दुसऱ्या प्रहरी किंवा केव्हाही गातात. उपशास्त्रीय व सुगम संगीतासाठी पिलू राग उपयुक्त आहे.

**आरोह :** नि सा ग म प नी सां |

**अवरोह :** सां नी ध प, ध प म ग रे सा नि सा |

**पकड :** सा ग म प, ध प म ग, रे सा नि सा |

### माझा अभ्यास

| राग | विकृत स्वर | थाट | वर्ज्य स्वर | जाती | वादी-संवादी | गानसमय | पकड |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भूपाली | | | | | | | |
| काफी | | | | | | | |
| यमन | | | | | | | |
| अल्हैया बिलावल | | | | | | | |
| भीम पलासी | | | | | | | |
| दूर्गा | | | | | | | |
| पिलू | | | | | | | |

# घटक ४ परिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या

## ४.१ ठेका :

तालाचे स्वरूप प्रदर्शित करण्यासाठी विभाग, टाळी व कालाला कायम ठेवून जी आकर्षक बोलरचना केली जाते त्यास 'ठेका' असे म्हणतात.

## ४.२ बंदीश :

राग गायनात गायल्या जाणाऱ्या गीतांना 'बंदीश' असे म्हणतात.

## ४.३ जमजमा :

मिजराबीच्या प्रहाराने शीघ्रतेने दोन स्वरांना एकदाच वाजवण्याच्या क्रियेला 'जमजमा' असे म्हणतात.

## ४.४ गत :

कोणत्याही वाद्यावर वाजवल्या जाणाऱ्या सुरबहार तालबद्ध रचनेस 'गत' असे म्हणतात.

## ४.५ मसितखानी गत :

विलंबित लयीत वाजवल्या जाणाऱ्या गतीस 'मसितखानी गत' असे म्हणतात.

## ४.६ रजाखानी गत :

मध्य लयीत वाजवल्या जाणाऱ्या गतीस 'रजाखानी गत' असे म्हणतात.

## घटक ५ सादरीकरण

### ५.१ धून

**राग – पीलू**     **त्रिताल (मध्यलय)**

#### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | ग | रे | ग | ऽ | रे | सा | रे | नि | नि | सा | रे | सा | नि | ध | प |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| ध | ध | प | ध | नि | नि | सा | ऽ | सा | ग | रे | म | ग | रे | सा | नि |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

#### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नि | सा | ग | म | प | प | ध | प | म | ग | म | प | ग | ग | नि | सा |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| सा | ग | रे | म | ग | रे | सा | रे | नि | नि | सा | रे | सा | नि | ध | प |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| प | ध | प | ध | नि | नि | सा | ऽ | सा | ग | रे | म | ग | रे | सा | नि |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

### ५.२.१ रजाखानी गत

**राग भूपाली**     **ताल त्रिताल**

#### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | ऽ | ग | रे | ग | प | ध | प | ग | धध | पप | ग | ग– | रे | सा | ग |
| दा | ऽ | दा | रा | दा | रा | दा | रा | दा | दिर | दिर | दिर | दाऽ | रदा | ऽर | दा |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| ध | धध | सा | रे | ग | रे | ग | प | ध | सांसां | धध | पप | ग– | गरे | –रे | सा |
| दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा | दा | दिर | दिर | दिर | दाऽ | रदा | ऽर | दा |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

#### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | गग | प | ध | सां | ध | सां | – | प | धध | सांसां | रेंरें | गं– | गरें | –रें | सां |
| दा | दिर | दा | दा | दा | रा | दा | ऽ | दा | दिर | दिर | दिर | दाऽ | रदा | ऽर | दा |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |
| प | धध | सां | रें | गं | रें | सां | ध | प | ग | धध | पप | ग– | गरे | –रे | सा |
| दा | दिर | दा | दा | दा | रा | दा | रा | दा | रा | दिर | दिर | दाऽ | रदा | ऽर | दा |
| × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

## ५.२.२ रजाखानी गत

### राग – काफी

### ताल – त्रिताल

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मप | धप | म | ग | मम | रे | रे | ग | सा | रे | प | पप | ध | प | मग | रेग |
| दिर | दिर | दा | रा | दिर | दा | रा | रा | रा | दा | रा | दिर | दा | रा | दिर | दिर |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| सा | रेरे | ग | म | म | प | ध | प | निनि | धप | म | ग | म | ग | रे | सा |
| दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा | दिर | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| प | ध | नि | सां | नि | ध | म | प | धध | म | प | ग | रे | गग | म | प |
| दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा | दिर | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | मम | प | प | ध | निनि | सां | सां | रें | गंरें | गं | रें | सां | निध | निसां | सां |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| नि | निसां | नि | ध | म | धप | म | ग | म | मम | ध | प | सां | निनि | ध | प |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |
| ध | मप | म | ग | रे | गग | रे | सा | सा | गग | म | प | सां | निनि | ध | प |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## ५.२.३ रजाखानी गत

### राग – यमन

### ताल – त्रिताल

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नि़ | रेरे | रे | ग | V | मं | ग | मं | प | V | प | मं | ग | रे | सा | सा |
| दा | दिर | दा | रा | ऽ | दा | रा | दा | दा | ऽ | दा | रा | दा | रा | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ध़ | नि़नि़ | रे | ग | रे | सा | नि़ | रे | ग | मंमं | प | मं | ग | रे | सा | V |
| दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | मंमं | ध | नी | सां | नी | सां | – | नि | रेंरें | गं | रें | नि | रें | सां | – |
| दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | ऽ | दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | ऽ |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नि | रेंरें | गं | रें | सां | नीनी | ध | प | मं | धध | प | मं | ग | रे | सा | सा |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | दा | रा | दा | रा |
| ० | | | | ३ | | | | × | | | | २ | | | |

## माझा अभ्यास

(१) तबल्यावर अभ्यासक्रमातील ताल समजून घ्या व समेची मात्रा ओळखण्याचा सराव करा.

## ५.३.४ सरगम गीत

## राग अल्हैया बिलावल

## द्रुत एक ताल

### स्थायी

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सां | नि | ध | नि | सां | ऽ | सां | रें | सां | नि | ध | प |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| म | ग | म | रे | ग | म | प | ग | म | रे | सा | ऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ऩि | सा | ग | रे | सा | ऩि | ध़ | ध़ | सा | ऽ | रे | सा |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ग | म | रे | रे | ग | म | प | ग | म | रे | सा | ऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प | प | ध | नि | सां | ऽ | सां | रें | मं | रें | सां | ऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सां | रें | गं | मं | पं | गं | मं | रें | सां | ऽ | रें | सां |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| सां | रें | सां | नि | ध | प | ग | प | ध | नि̲ | ध | प |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| म | ग | म | रे | ग | म | प | ग | म | रे | सा | ऽ |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

## ५.३.५ सरगम गीत

## राग – भीमपलासी

## ताल झपताल (मध्यलय)

### स्थायी

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नी | सा | म | ग | रे | सा | ऽ | प | नि | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नी | सा | म | ग | म | प | म | ग | रे | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नी | सा | म | ग | म | प | नि | प | नि | सां |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नि | ध | प | म | ग | प | म | ग | रे | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | प | म | ग | म | प | नि | प | नी | सां |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| नि | सां | मं | गं | रें | सां | ऽ | नि | ध | प |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| प | रें | सां | सां | रें | नि | सां | प | नि | ध |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| प | म | ग | म | प | ग | म | ग | रे | सा |
| × | | २ | | | ० | | ३ | | |

## ५.३.६ सरगम गीत
## राग – दुर्गा
## ताल द्रुत एकताल

### स्थायी

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | – | – | म | प | ध | म | रे | सा | ध̣ | सा | सा |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| रे | म | प | ध | – | म | प | म | प | ध | प | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | सां | ध | सां | – | रें | सां | ध | म | – | प | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | सां | ध | प | म | ध | प | म | रे | सा | ध̣ | सा |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

### अंतरा

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| म | म | म | प | – | ध | सां | ध | सां | रें | सां | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध | सां | रें | मं | रें | – | सां | रें | सां | ध | म | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| प | ध | – | म | प | – | रे | म | – | रे | सा | – |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |
| ध̣ | सा | रे | म | – | प | ध | रें | सां | ध | म | प |
| × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

## ६.१ – राष्ट्रगीत – जन गण मन
## गीतकार आणि संगीतकार – स्व. श्री. रविन्द्रनाथ टागोर
## ताल – केहरवा (केरवा)

**जन गण मन हे ४८ ते ५२ सेकंदात म्हटले जाते.**

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | रे | ग | ग | ग | ग | ग | ग | ग | – | ग | ग | रे | ग | म | – |
| ज | न | ग | ण | म | न | अ | धि | ना | ऽ | य | क | ज | य | हे | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| ग | – | ग | ग | रे | – | रे | रे | नि़ | रे | सा | – | – | – | सा़ | – |
| भा | ऽ | र | त | भा | ऽ | ग्य | वि | धा | ऽ | ता | ऽ | ऽ | ऽ | पं | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| प | – | प | प | – | प | प | प | प | – | प | प | म॑ | ध | प | – |
| जा | ऽ | ब | सिं | ऽ | धु | गु | ज | रा | ऽ | त | म | रा | ऽ | ठा | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| म | – | म | म | ग | – | ग | ग | रे | म | ग | – | – | – | – | – |
| द्रा | ऽ | वि | ड | उ | ऽ | त्क | ल | बं | ऽ | ग | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| ग | – | ग | ग | ग | – | ग | रे | प | प | प | – | म | – | म | – |
| विं | ऽ | ध्य | हि | मा | ऽ | च | ल | य | मु | ना | ऽ | गं | ऽ | गा | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| ग | – | ग | ग | रे | रे | रे | रे | नि़ | रे | सा | – | – | – | – | – |
| उ | ऽ | च्छ | ल | ज | ल | धि | त | रं | ऽ | ग | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| ग | ग | ग | ग | ग | – | ग | ग | रे | ग | म | – | – | – | – | – |
| त | व | शु | भ | ना | ऽ | में | ऽ | जा | ऽ | गे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| ग | म | प | प | प | – | म | ग | रे | म | ग | – | – | – | – | – |
| त | व | शु | भ | आ | ऽ | शि | स | मा | ऽ | गे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग | – | ग | – | रे | रे | रे | रे | ऩि | रे | सा | – | – | – | – | – |
| गा | ऽ | हे | ऽ | त | व | ज | य | गा | ऽ | था | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| प | प | प | प | प | – | प | प | प | – | प | प | म॑ | ध | प | – |
| ज | न | ग | ण | मं | ऽ | ग | ल | दा | ऽ | य | क | ज | य | है | ऽ |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| म | – | म | म | ग | – | ग | ग | रे | म | ग | – | – | – | सां | नि |
| भा | ऽ | र | त | भा | ऽ | ग्य | वि | धा | ऽ | ता | ऽ | ऽ | ऽ | ज | य |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| सां | – | – | – | – | – | नि | ध | नि | – | – | – | – | – | ध | प |
| हे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ज | य | हे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ज | य |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| ध | – | – | – | – | – | – | – | सा | सा | रे | रे | ग | ग | रे | ग |
| हे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ज | य | ज | य | ज | य | ज | य |
| × | | | | ० | | | | × | | | | ० | | | |
| म | – | – | – | – | – | – | – | | | | | | | | |
| हे | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | | | | | | | | |
| × | | | | ० | | | | | | | | | | | |

# ६.२ वन्दे मातरम्

## गीतकार – स्व. श्री. बंकिमचन्द्र चॅटर्जी

## संगीतकार – स्व. श्री. रविन्द्रनाथ टागोर

## राग – देस

## ताल – केहरवा (केरवा)

## स्थायी

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सा | रे | – म | पम | प | – | – | – |
| व | न्दे | ऽमा | ऽत | रम् | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | ० | | × | | ० | |
| म | प | –नि | सांनि | सांसां | – | – | – |
| व | न्दे | ऽमा | ऽत | रम् | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | ० | | × | | ० | |
| सारें | नि– | धप | –प | पध | म | गरे | –रे |
| सुज | लाऽ | ऽऽ | ऽम् | सुफ | ला | ऽऽ | ऽम् |
| × | | ० | | × | | | |
| रेप | मम | गरे | –ग | सा | – | – | –सा |
| मल | यज | शीऽ | ऽत | ला | ऽ | ऽ | ऽम् |
| × | | ० | | × | | ० | |
| सा | रेम | पम | पप | –प | निध | धप | – |
| स | स्यश्या | ऽम | लाम् | ऽमा | ऽत | रम् | ऽ |
| × | | ० | | × | | ० | |
| म | प | –नि | सांनि | सां | – | – | – |
| व | न्दे | ऽमा | ऽत | रम् | ऽ | ऽ | ऽ |
| × | | ० | | × | | ० | |
| म | प | नि | नि | निनि | सांनि | सां | –नि |
| शु | भ्र | ज्यो | त्स्नां | पुल | कित | या | ऽमि |
| × | | ० | | × | | ० | |
| सां | – | नि | निनि | सांनि | सां | सां रें | सांनि |
| निम् | ऽ | फु | ल्लकु | सुमि | त | द्रुम | दल |
| × | | ० | | × | | ० | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| निध | निध | प | – | रेरे | मग | रे | – |
| शोऽ | ऽभि | नीम् | ऽ | सुहा | ऽसि | नीम् | ऽ |
| × | | ० | | × | | ० | |
| रेनि | धनि | धप | –ध | प | – | मप | नि |
| सुम | धुर | भाऽ | ऽषि | णीम् | ऽ | सुख | दाम् |
| × | | ० | | × | | ० | |
| निनि | नि | नि | सांनि | सां | – | म | प |
| वर | दाम् | ऽमा | ऽत | रम् | ऽ | वं | दे |
| × | | ० | | × | | ० | |
| –नि | सांनि | सां | – | – | – | म | प |
| ऽमा | ऽत | रम् | ऽ | ऽ | ऽ | वं | दे |
| × | | ० | | × | | ० | |
| –नि | सांनि | सां | – | | | | |
| ऽमा | ऽत | रम् | ऽ | | | | |
| × | | ० | | | | | |

## माझा अभ्यास

प्र. १ जन गण मन किती वेळात गायले जाते?

प्र. २ वंदे मातरम् चा मराठी अनुवाद समजून घ्या.

## ४ तालवाद्य

| अ.क्र. | घटक | उप घटक |
|---|---|---|
| १ | तबल्याचा उगम व विकास | १.१ तबल्याचा उगम<br>१.२ तबल्याचा विकास |
| २ | पारिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या व स्पष्टीकरण | २.१ मात्रा<br>२.२ लय<br>२.३ ताल<br>२.४ बोल<br>२.५ ठेका<br>२.६ आवर्तन<br>२.७ सम<br>२.८ टाळी<br>२.९ काल<br>२.१० विभाग |
| ३ | भारतीय तालवाद्यांचा परिचय | ३.१ पखवाज<br>३.२ ढोलकी<br>३.३ संबळ |
| ४ | पाश्चात्य तालवाद्यांचा परिचय | ४.१ बोंगो<br>४.२ कोंगो |
| ५ | तबला- डग्गा आणि त्याची विविध अंगे | |
| ६ | तबला- डग्याचे विविध वर्ण (बोल) आणि त्यांची वादन पद्‌धती | ६.१ तबल्यावर वाजवले जाणारे विविध वर्ण<br>६.२ डग्यावर वाजवले जाणारे विविध वर्ण<br>६.३ संयुक्तरित्या वाजवले जाणारे वर्ण<br>६.४ मिश्र वाजवले जाणारे वर्ण |
| ७ | ताल परिचय व लिपीबद्‌ध | ७.१ ताल परिचय<br>७.२ ताल लिपीबद्‌ध करणे |
| ८ | तालवादकांची जीवनचरित्रे | ८.१ उ. अमीरहुसेन खाँ<br>८.२ पं. नाना पानसे |

# घटक १ तबल्याचा उगम व विकास

## १. तबल्याचा उगम व विकास

### १.१ तबल्याचा उगम

तबल्याच्या उगमाबाबत बऱ्याच आख्यायिका सांगितल्या जातात यापैकी काही आख्यायिका चे पुरावे सांगितले आहेत तबल्याच्या निर्मितीबाबत पं. अरविंद मुळगावकर व डॉ. आबान मिस्त्री यांनी या संदर्भात संशोधन करून त्यांचे मत त्यांच्या पुस्तकात मांडले आहे.

काही ठिकाणी दोन पखवाज वादकांच्या जुगलबंदी मध्ये एका वादकाची हार झाली त्यामुळे त्या वादकाने चिडून त्याचे दोन भाग केले त्यातूनच तबल्याचा जन्म झाला असे सांगीतले जाते. काही जणांच्या मते तबल्याचा उगम पंजाबमध्ये प्राचीन वाद्य 'दुक्कड' पासून झाला असे म्हणतात.

भरताच्या नाट्यशास्त्रामध्ये 'त्रिपुष्कर' वाद्याचा उल्लेख आढळतो या वाद्याचे तीन भाग उर्ध्वक, अंकिक, आलिंग्य असे होते. काळाच्या बदलानुसार त्यातील अंकिक भाग राहिला तो पखवाजसारखा दिसत अशा रीतीने दोन अंकिकाच्या जोड्या वाजवणे म्हणजे तबला असे काही जणांचे मत आहे. काही ठिकाणी पर्शियन लयवाद्यांचा संबंध तबल्याच्या उत्पत्तीबाबत नामसाधर्म्य म्हणून लावला जातो यामध्ये तब्ल बलादी, तब्ल टर्की, तब्ल जंग यांचा समावेश होतो.

काहीजण अमीर खुसरो यांना तबल्याचे जनक म्हणतात. तबल्याशी साम्य असलेले महाराष्ट्रातील एक तालवाद्य संबळ, प्राचीन वाद्य दूर्दर व नक्कारा ही वाद्ये तबल्याशी मिळती जुळती आहेत कार्ला (लोणावळा, महाराष्ट्र) येथील प्राचीन गुहेत एक स्त्री तबल्यासारखे वाद्य वाजवत असल्याचे डॉ. आबान मिस्त्री यांनी आपल्या पुस्तकात लिहिले आहे.

ख्रि. पू. २८०० काळात सिंधू संस्कृती ही अत्यंत प्रगत अवस्थेत पोहोचलेली एक संस्कृती होती, येथील उत्खननात सापडलेल्या एका मूर्तीमध्ये लयवाद्य वाजवताना आढळते. वेदोपनिषदाच्या काळात भूमीदुंदूभी या लयवाद्याचा उपयोग केला जात असे हे वाद्य जमिनीत खड्डा खोदून त्यावर चामडे ताणून या चामड्यावर काठ्यांनी वाजवतात.

वरील सर्व गोष्टी लक्षात घेता तबल्याच्या उत्पत्ती बाबत आजही कुतूहल आहे. हे जरी खरे असले तरी भारतीय संगीतामध्ये तबला या वाद्याचा प्रवेश ही भारतीय संगीतासाठी अत्यंत महत्त्वपूर्ण घटना होय.

### १.२ तबल्याचा विकास

ख्याल गायकीचा प्रसार जसा वाढू लागला तसा तबला या वाद्याचा प्रचार वाढत गेला. नृत्यास पखावजाच्या साथीची वेगमर्यादा येऊ लागली. तसे तबला हा नृत्याच्या साथीला पूरक होऊ लागला. कथ्थक नृत्यातील तत्कार हा तबल्याबरोबर द्रुतलयीत वेगाने सादर केला जाऊ लागला. प्रत्येक स्वराचा तबला निर्माण करणे शक्य होऊ लागले. जे की पखवाजात अशक्य होते. डग्याला कणीक ऐवजी कायमस्वरूप शाई लावण्यात आली. डग्याला दोरीऐवजी चामडीची वादी वापरात येऊ लागली. तबल्यामध्ये अतिविलंबित ते अतिद्रुतलयीत वादन करणे शक्य असल्यामुळे तंतुवाद्याच्या साथीसाठी तबला वाद्य पूरक ठरले.

गायनाची व नृत्याची विविध घराणी विकसित होत असताना तबल्याच्या साथीचापण विकास होऊ लागला. वेगवेगळ्या लयीचे ठेके निर्माण झाले. तबल्याच्या बोलाची भाषा प्रगल्भ होऊ लागली. साथीबरोबर तबला हे वाद्य स्वतंत्रपणे वादन करणारे वाद्य म्हणून ओळखू लागले.प्रत्येक घराण्याची वादन वैशिष्ट्ये व बंदिशी यांच्या दृष्टीने तबल्याचे साहित्य समृद्ध होऊ लागले. बंद बाज व खुला बाज या दोन पद्धतीचा विकास तबल्यामध्ये दिसून येऊ लागला. आधुनिक युगात तबला डग्गा वादीऐवजी आता नट बोल्ट स्वरुपात दिसू लागला आहे.

## माझा अभ्यास

**प्र. १ रिकाम्या जागा भरा.**

(१) .......... यांना तबल्याचे जनक म्हणतात.

(२) भरताच्या नाट्यशास्त्रात .......... या वाद्याचा उल्लेख आढळतो.

(३) वेदोपनिषदाच्या काळात ......... या लयवाद्याचा उपयोग केला जात असे.

(४) पंजाबमध्ये ......... हे प्राचीन वाद्य आढळते.

(५) .......... हे पर्शियन लयवाद्य आहे.

**प्र. २ तबल्याच्या विकासाविषयी थोडक्यात माहिती लिहा.**

## घटक २ पारिभाषिक शब्दांच्या व्याख्या

### २.१ मात्रा

ताल ज्या एककाद्वारे मोजला जातो त्यास ‘मात्रा’ असे म्हणतात किंवा ताल मोजण्याचे साधन म्हणजे मात्रा होय.

उदा. दादरा ताल ६ मात्रांचा आहे.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा : | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| | × | | | ० | | |

### २.२ लय

ज्या गतीमध्ये मात्रा चालतात त्या गतीस ‘लय’ असे म्हणतात किंवा गायन वादन यामधील वेळेच्या समांतर चालीस लय म्हणतात. लय ही मात्रेद्वारे दाखवतात.

उदा. दादरा तालाची मध्य लय

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा : | १ऽ | २ऽ | ३ऽ | ४ऽ | ५ऽ | ६ऽ |
| | × | | | ० | | |

### २.३ ताल

संगीतात वेळ मोजण्याच्या साधनाला ‘ताल’ असे म्हणतात किंवा गायन, वादन व नृत्य ज्यात प्रस्थापित होतात त्याला ‘ताल’ असे म्हणतात.

उदा. झपताल

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा : | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| | × | | २ | | | ० | | ३ | | |

### २.४ बोल

तबल्या डग्ग्यावर जे विविध वर्ण वाजवले जातात, त्यांना ‘बोल’ असे म्हणतात.

उदा. धा धीं धीं धा

### २.५ ठेका

तालाचे स्वरूप स्पष्ट करण्यासाठी जी सुंदर बोल रचना तबला डग्ग्यावर वाजवली जाते त्या रचनेस ‘ठेका’ असे म्हणतात किंवा तालाची टाळी, काल व खंडानुसार ताल स्पष्ट करणारी बोलरचना म्हणजेच ठेका होय.

उदा. रूपक ठेका

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा : | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ठेका : | ती | ती | ना | धी | ना | धी | ना |
| | ० | | | १ | | २ | |

## २.६ आवर्तन

कोणत्याही तालाच्या पहिल्या मात्रेपासून शेवटच्या मात्रेपर्यंत एखादा ताल वाजवणे किंवा म्हणणे या क्रियेला त्या तालाचे एक ‘आवर्तन’ म्हणता येईल.

उदा. दादरा तालाचे एक आवर्तन

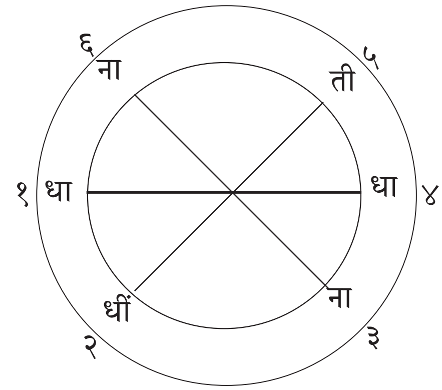


## २.७ सम

तालाच्या पहिल्या मात्रेस सम असे म्हणतात किंवा गायक, वादक जेथे विशेष प्रकारचा जोर देतात व जेथून तालाची सुरुवात होते त्या ठिकाणाला ‘सम’ असे म्हणतात.

समेचे चिन्ह ( × ) असे आहे.

उदा. तेवरा तालाची सम पहिल्या मात्रेवर असते.

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा : | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ठेका : | धा | दिं | ता | तीट | कत | गदि | गन |
| | × | | | २ | | ३ | |

## २.८ टाळी

तालाचे स्वरुप स्पष्ट करण्यासाठी एका हाताच्या तळव्याने दुसऱ्या हाताच्या तळव्यावर आघात करणे, या क्रियेला ‘टाळी’ अथवा ‘भरी’ असे म्हणतात.

उदा. झपतालमध्ये १, ३, ८ व्या मात्रेवर टाळी आहे.

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा : | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| | धी | ना | धी | धी | ना | ती | ना | धी | धी | ना |
| | × | | २ | | | ० | | ३ | | |
| | (टाळी) | | (टाळी) | | | (काल/खाली) | | (टाळी) | | |

## २.९ काल (खाली)

तालाचे स्वरुप स्पष्ट करण्यासाठी टाळी न वाजवता केवळ एका हाताने इशारा केला जातो त्यास ‘काल’ अथवा ‘खाली’ असे म्हणतात.

कालाचे चिन्ह ० असे आहे.

उदा. २.८ मधील झपताल पहावे.

## २.१० विभाग

तालाच्या वजनानुसार मात्रांचे जे भाग पाडले जातात, त्या भागांना ‘विभाग’ किंवा ‘खंड’ म्हणतात.

विभागाचे चिन्ह | असे आहे.

उदा. चौतालामध्ये सहा विभाग आहेत.

| मात्रा : | १ | २ | | ३ | ४ | | ५ | ६ | | ७ | ८ | | ९ | १० | | ११ | १२ | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | धा | धा | \| | दिं | ता | \| | तीट | धा | \| | दिं | ता | \| | तीट | कत | \| | गदि | गन | \| |
| | × | | \| | ० | | \| | २ | | \| | ० | | \| | ३ | | \| | ४ | | \| |
| | | | (विभाग) | | | (विभाग) | | | (विभाग) | | | (विभाग) | | | (विभाग) | | | (विभाग) |

### माझा अभ्यास

**प्र. १ एका वाक्यात उत्तरे लिहा.**

(१) लय कशाला म्हणतात?

(२) संगीतामधील वेळ मोजण्याच्या साधनाला काय म्हणतात?

(३) विभाग कशाला म्हणतात?

(४) बोल कशाला म्हणतात?

(५) तालाच्या सुरुवातीच्या मात्रेला काय म्हणतात?

**प्र २ रिकाम्या जागा भरा.**

(१) ताल मोजण्याचे एकक .......... होय.

(२) तालाचे स्वरूप स्पष्ट करण्यासाठी वाजणारी सुंदर बोलरचना म्हणजे .......... होय.

(३) केवळ एका हाताने इशारा करणे या क्रियेला .......... म्हणतात.

(४) तालाच्या प्रथम मात्रेपासून शेवटच्या मात्रेपर्यंत एक .......... पूर्ण होते.

(५) एका हाताच्या तळव्याने दुसऱ्या हाताच्या तळव्यावर आघात करण्याच्या क्रियेला .......... म्हणतात.

# घटक ३ भारतीय तालवाद्यांचा परिचय

## ३.१ पखवाज

पखवाज

मृदंग म्हणजे मातीचे अंग, पखवाजलाच मृदंग असेही म्हणतात. पखवाज हा शब्द पक्षवाद्य शब्दापासून आला असावा असे मानतात. पक्षवाद्य याचा अर्थ बाजूने वाजवले जाणारे वाद्य होय. पखवाजाचे खोड लाकडी असते. पखवाजाची लांबी सुमारे ६० सेंटीमीटर इतकी असते. पखवाजाच्या उजव्या तोंडाचा व्यास १६ सेंटीमीटर व डाव्या तोंडाचा व्यास २५ सेंटीमीटर इतका असतो. तोंडाला पुडी लावण्याची क्रिया तबल्याप्रमाणेच असते. उजव्या पुडीवर शाई लवलेली असते डाव्या पुडीवर मात्र कणीक लावतात. पखवाज स्वरात लावण्यासाठी वादीमध्ये गठ्ठे लावलेले असतात. पखवाज आडवा ठेवून हाताने वाजवतात. उजव्या पुडीवर बोटांनी आघात करुन डाव्या पुडीवर संपूर्ण डाव्या हाताच्या पंजाच्या सहाय्याने जोरकस वादन केले जाते. पखवाजातून गंभीर नाद निर्माण होतो. धृपदधमार गायन, रूद्रवीणावादन व कथ्थक नृत्याच्या साथीला पखवाज वाजवला जातो. तसेच भजन, किर्तनात देखील पखवाजची साथ महत्वाची असते. सध्या फ्यूजन या संगीत प्रकारात देखील पखवाज वाजवला जातो. त्याचप्रमाणे संतूर, सरोद, बासरी वादनाच्या साथीसाठी देखील पखवाज वाजवतात. तसेच पखवाजाचे स्वतंत्रवादन देखील केले जाते.

## ३.२ ढोलकी

महाराष्ट्रामध्ये लोकसंगीत म्हटले की ढोलकीचे नाव पुढे येते. ढोलकी या वाद्याला अनेक कलावंतानी प्रतिष्ठा मिळवून दिली आहे. ढोलकीचे खोड लाकडी असते. शिसम, खैर हे लाकूड प्रामुख्याने खोडासाठी उपयोगात आणले जाते. खोडाची लांबी साधारण २१ इंचापर्यंत असते. उजव्या व डाव्या बाजूचा व्यास कमी अधिक असतो. उजव्या बाजूची पुडी लोखंडी कडीवर मढवून ती कडी तोंडावर बसवलेली असते. या पुडीवर शाई लावलेली असते, ही पुडी शाई, मैदान अशा भागांमध्ये दिसून येते. डावी पुडी ही डग्याच्या पुडीप्रमाणे असते फक्त त्याला शाई वरून लावलेली नसते. या पुडील आतून शाईसारखेच मेण लावलेले असते. डावी पुडी ही गजरा, चाट, मैदान अशा स्वरूपात दिसते. दोन्ही पुड्या खोडावर दोरीने आवळल्या जातात. आता यामध्ये बदल होऊन दोरीच्या जागी नटबोल्ट आले आहेत. ढोलकी हे वाद्य पखवाजाप्रमाणेच आडवे ठेऊन वाजवले जाते त्यामुळे त्याचा आवाज मोठा येतो. ढोलकीला शाई कमी असल्यामुळे टीपेला म्हणजे वरच्या स्वरात लावतात. प्रामुख्याने लावणी, पोवाडा या गीतप्रकारांच्या साथीला ढोलकी वाजवतात.

## ३.३ संबळ

लोकसंगीतामध्ये गोंधळ हा प्रकार महत्त्वाचा आहे. या गोंधळाच्या साथीला संबळ हे वाद्य वाजवले जाते. लग्नामध्ये जागरण गोंधळाच्या वेळी संबळ आर्वजून बघायला मिळते. साधारण तबला डग्यासारखी या

वाद्याची रचना असते. या वाद्याचा उजवीकडील भाग हा तबल्याप्रमाणे छोटा असतो व लाकडापासून तयार केलेला असतो. या खोडावर लोखंडी कडीचा आधार घेऊन पुडी बसवलेली असते. या पुडीवर संपूर्ण मैदान असते ही पुडी पातळ चामड्यापासून तयार केलेली असल्यामुळे व यावर शाई नसल्यामुळे या मधून कडक आवाज निघतो. या उलट डावीकडील बाजू ही डग्ग्याप्रमाणे दिसते. डावी बाजू लोखंडी भांड्यावर पुडी जाड चमड्यापासून मढवलेली असते. या पुडीला आतील बाजूस मेण लावलेले असते त्यामुळे याचा आवाज डग्ग्याप्रमाणे येतो. या दोन्ही पुड्या खालील बाजूस असलेल्या दोन लोखंडी कड्यांवर दोरीने ताण देऊन बसविलेल्या असतात. याचे दोन्ही भाग लोखंडी स्टँडवर बसवलेले असतात. हे वाद्य दोरीच्या सहाय्याने गळ्यात अडकवून वाजवतात या वाद्याचे वादन करताना याच्या डाव्या भांड्याच्या दोऱ्या दोन्ही मांड्यामध्ये धरुन त्यांना कमीअधीक ताण देऊन वाजवले जाते. या वाद्याच्या दर्शनी भागात नक्षीदार कापड बांधून सजवले जाते. हे वाद्य प्रामुख्याने गोंधळी लोक वाजवतात. या वाद्याचा उपयोग जोगवा, देवीचा गोंधळ यांच्या साथीसाठी केला जातो. संबळ हे वाद्य वेताच्या काडयांनी वाजवतात.

## माझा अभ्यास

### प्र. १ एका वाक्यात उत्तरे लिहा .

१. धृपद गायनाच्या साथीसाठी कोणते वाद्य वाजवतात?

२. कीर्तनामध्ये साथीला कोणते वाद्य वाजवले जाते? .

३. लावणीच्या साथीला कोणते वाद्य वाजवले जाते?

४. गोंधळाच्या साथीला कोणते वाद्य वाजवतात?

५. पखवाजाच्या डाव्या पुडीला बाहेरून काय लावतात?

### प्र. २ खालील वाद्यांची माहिती लिहा.

१. संबळ २.ढोलकी ३. पखवाज

### प्र. ३ फरक स्पष्ट करा.

पखवाज – तबला

ढोलकी – पखवाज

तबला – संबळ

### प्र. ४ एखाद्या वाद्याचे चित्र काढा.

## घटक ४ पाश्चात्त्य तालवाद्यांचा परिचय

### ४.१ बोंगो

साधारणपणे ऑर्केस्ट्रामध्ये बरीचशी पाश्चात्त्य वाद्ये पहायला मिळतात त्यापैकी एक तालवाद्य म्हणजे बोंगो होय. या वाद्याची देखील दोन अंगे पहायला मिळतात. याच्या दोन्ही बाजू लाकडी खोडाच्या असून एकमेकांना जोडलेली असतात. डावी बाजू उजव्या बाजूपेक्षा मोठी असते त्यामुळे त्यांच्या मुखाचा व्यास कमी अधिक असतो. उजव्या बाजूच्या मुखावर पातळ तर डाव्या बाजूच्या मुखावर जाड चामडे मढवलेले असते. पुडीची किनार स्टीलच्या कड्यात ताणून मुखावर बसवले जाते. स्टीलच्या कड्याला चार बाजूंना खालच्या बाजूस नट असतात. हे नट आवळून अथवा सैल करून वाद्य स्वरात लावता येते. हे वाद्य खुर्चीवर बसून दोन गुडघ्यांच्या मध्ये ठेवून वाजवतात. बोंगो हे वाद्य बोटाने अथवा सर्व बोटे जुळवून थापेने वाजवतात. एकाच बाजूला दोन्ही हातांच्या बोटांनी आघात करून देखील वाजवतात.

या वाद्यावर केवळ मात्रा सदृश्य ताल वाजवला जातो. संगीतकार ओ. पी. नय्यर यांच्या सिनेगीतामध्ये बोंगो वाद्याचा वापर जास्त ऐकायला मिळतो.

### ४.२ कोंगो

बोंगो या वाद्याप्रमाणेच कोंगो हे देखील एक लय तालाचे वाद्य आहे. या वाद्याला शाई नसल्यामुळे या वाद्यातून आस निर्माण होत नाही. या वाद्याचे तीन उभे भाग असतात. तीन भाग क्रमशः मोठे, मध्यम व लहान आकाराचे असतात. तीनही भाग उंचीला समान असतात. प्रत्येक भागाच्या मुखावर बोंगोप्रमाणेच स्टीलच्या कडीमध्ये जाड, मध्यम, पातळ चमडे मढवले असते. बाकी सर्व रचना बोंगोप्रमाणेच असते. सिनेगीतांमध्ये याचा वापर जास्त केला जातो. कोंगो देखील बोटांनी व संपूर्ण पंजाचा वापर करून स्टँडवर उभे ठेऊन वाजवतात.

## माझा अभ्यास

**प्र. १ एका वाक्यात उत्तरे लिहा**

२ संगीतकार ओ.पी.नय्यर यांनी कोणत्या वाद्याचा अधिक वापर केला ?

३ तीन उभे भाग असलेले पाश्चात्त्य वाद्य कोणते ?

४ दोन्ही खोडे एकमेकांशी जोडलेले असतात अशा पाश्चात्त्य वाद्याचे नाव लिहा

५ उभ्या स्टँडवर ठेवून कोणते वाद्य वाजवतात.

**प्र. २ खालील वाद्यांची माहिती लिहा.**

१ कोंगो

२ बोंगो

**प्र. ३ बोंगो कोंगोमधील फरक स्पष्ट करा.**

# घटक ५ तबला डग्गा आणि त्याची विविध अंगे.

जगातील सर्वात लोकप्रिय वाद्य म्हणून तबला या वाद्याकडे आज बघितले जाते. हे वाद्य तबला व डग्गा या दोन भागांचे मिळून बनले आहे. तबल्याला दायाँ व डग्याला बायाँ असे म्हणतात.

तबला डग्याच्या विविध अंगांचे विश्लेषण

## तबला

**१ खोड –** तबल्याचे खोड शिसम, सागवान, खैर, बिजासारा, फणस इत्यादी. झाडांच्या बुंध्यापासून बनवतात. खोडाचा आकार वरच्या बाजूने निमूळता होत गेलेला असतो खोडाच्या तोंडाकडील भागाचा व्यास साधारणपणे सव्वापाच, साडेपाच, सहा इंच इतका असतो व तळाचा भाग नऊ इंचापर्यंत असतो. उंची साधारण एक फूट असते. खोड मशीनवर आतल्या बाजूने कोरलेले असते.

**२. पुडी–** शाई, लव, चाट, गजरा इ. भागांची मिळून पुडी तयार होते. ही बकऱ्याच्या चामड्यापसून बनवलेली असते. संपूर्ण पुडी तबल्याच्या मुखावर चामडीच्या वादीने मढवलेली असते.

**३.शाई –** साधारण शाई ही तबल्याच्या पुडीच्या मध्यावर घालतात. शाईचे एकावर एक पातळ थर मऊ दगडीगोट्याने घासून भरतात. सरस किंवा मैद्याची खळ, शाई पावडर यांच्या मिश्रणापासून शाई तयार करतात. या शाईमुळे तबला स्वरात लावता येतो. शाईचा थर पातळ असेल तर तो उंच स्वरात आणि शाईचा थर जाड असेल तर तो खालच्या स्वरात तबला लावला जातो.

**४. लव –** शाई व चाटीच्या मध्ये साधारण अर्धा ते एक इंच रूंदीचा जो भाग असतो त्याला लव असे म्हणतात.

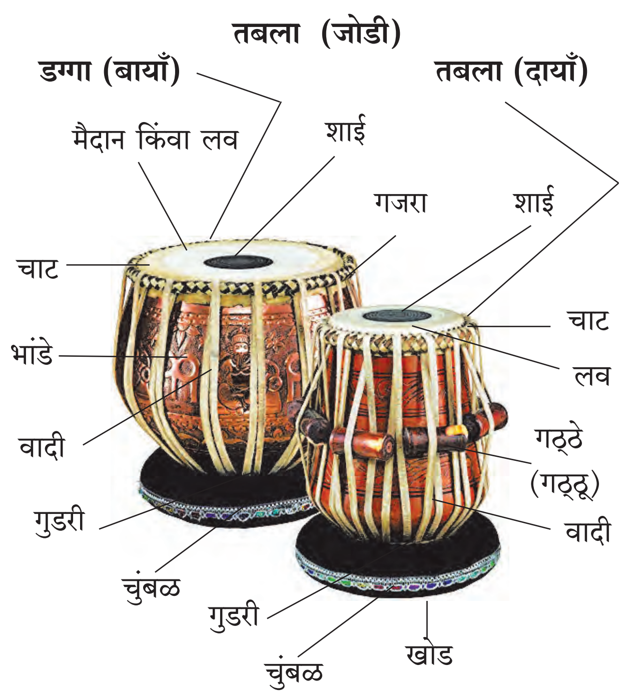

**५. चाट –** लवेच्या बाजूला आणि गजऱ्याला चिकटून जो अर्धा ते एक इंच रुंदीचा जो भाग असतो त्याला चाट किंवा किनार असे म्हणतात.

**६. गजरा–** पुडीला गोलाकार बाजूने गुंफून ठेवण्यासाठी चामडीच्या वादीपासून वेणीसारखा गजरा गुंफलेला असतो. गजऱ्याला सोळा घरे व चौसष्ठ छिद्रे असतात.गजऱ्याच्या सोळा छिद्रांतून वादी ओवलेली असते.

**७. वादी –** तबल्याच्या मुखावर पुडी घट्ट राहावी यासाठी गजऱ्याच्या छिद्रातून जी चामड्याची लांब पट्टी ओवलेली असते त्याला वादी म्हणतात. ही वादी तबल्याच्या तळाशी असलेल्या गुडरीला गुंफलेली असून ती अखंड असते सध्या नॉयलॉनची वादी देखील पहायला मिळते

**८. गठ्ठे –** तबल्याच्या पुडी वरील ताण कमी अधिक करण्यासाठी गठ्ठ्यांचा उपयोग केला जातो या मुळे तबला स्वरात लावला जातो. साधारणपणे तीन इंच लांब व एक इंच जाडीचे दंडगोलाकार आठ गठ्ठे वादीच्याखाली लावलेले असतात.

**९. गुडरी –** ही तबल्याच्या तळाला असते तबल्याच्या तळाशी वादीपासून एक कडे तयार केलेले असते. या कडयामधून वादी ओवून गजऱ्यामध्ये ओवलेली असते यामुळे पुडीवरील ताण कायम रहातो.

### डग्गा

**भांडे –** डग्याची पुडी ज्या भागावर मढवलेली असते त्या भागाला भांडे असे म्हणतात. हे भांडे पित्तळ, तांबे व लोखंड इत्यादी धातूपासून बनवलेले असते. भांड्याचा आकार गोलाकार असून आतून पोकळ असतो. भांड्याची उंची साधारण २०–२२ सें. मी इतकी असते. भांड्याचा व्यास साधारण नऊ इंच इतका असतो. डग्याचे भांडे मोठे, मध्यम व लहान अशा विविध आकारात बाघायला मिळते. काही ठिकाणी मातीचे भांडे देखील पहायला मिळते.

डग्याचे पुडी, शाई, मैदान, गजरा, वादी, गुडरी भागांची रचना साधारण तबल्याप्रमाणेच असते, डग्याची शाई मध्यभागी न लावता एका बाजूला चाटीच्या जवळ लावतात.

## माझा अभ्यास

**प्र. १ एका वाक्यात उत्तरे दया.**

१. तबल्याचे खोड कोणत्या लाकडापासून तयार करतात ?

२. डग्याचे भांडे कोणत्या धातू पासून तयार करतात?

३. तबल्याला किती गठठे असतात ?

४. डग्यावरील चाट व शाई यांच्यामधील भागाला काय म्हणतात ?

५. गजरा कशाला म्हणतात ?

**प्र. २ तबला व डग्गा या वाद्यांचे चित्र काढून त्याच्या विविध भागांना नावे द्या.**

## घटक ६ तबला डग्ग्याचे विविध वर्ण (बोल) आणि त्यांची वादन पध्दती

तबला डग्ग्याच्या मुळाक्षरांची संकल्पना ही भारतीय संगीतामधील सात स्वरांच्या रचनेवर आधारीत असल्यामुळे त्यांची संख्या सात आहे.

(१) क् (२) घ् किंवा ग् (३) त् (४) द् किंवा ड्

(५) न् (६) ट् (७) र् यातील क् घ् किंवा ग् ही मुळाक्षरे डग्ग्यावर वाजणारी आहेत.

त् द् न् ट् र् ही तबल्यावर वाजणारी आहेत. भाषा सुलभ होण्यासाठी व नादाचा उच्चार करण्यसाठी अ, आ, ई, ए यांचा उपयोग करून तबला डग्ग्यातील वर्ण अथवा बोल तयार झाली आहेत.

### ६.१ तबल्यावर वाजवले जाणारे विविध बोल

(१) **ना अथवा ता :** तर्जनीने तबल्याच्या चाटीवर आघात केल्यानंतर ना अथवा ता हा बोल वाजतो. ही क्रिया होत असताना उजव्या हाताची अनामिका शाईच्या प्राथमिक भागावर हलक्या वजनाने ठेऊन मधले बोट वर उचललेले असले पाहिजे.

(२) **दि, दिं किंवा थूँ :** उजव्या हाताची सर्व बोटे जुळवून तबल्याच्या शाईच्या मध्यावर अलगद आघात केल्यानंतर दि, दिं किंवा थूँ हा बोल वाजतो.

(३) **तू :** तर्जनीने शाईच्या प्राथमिक भागावर लवेच्या जवळ आघात केल्यानंतर लगेच तर्जनी उचलणे या वादन क्रियेत तू हा बोल वाजवला जातो. या वादन क्रियेच्या वेळी उजव्या हाताची अनामिका शाईच्या सुरूवातीच्या भागावर ठेवावी.

(४) **ति :** ह्या बोलाच्या दोन वादन पध्दती आहेत. काहीजण उजव्या हाताच्या मध्यमाने तबल्याच्या शाईवर मध्यभागी शाईला दाबून वाजवतात तर काहीजण मध्यमा, अनामिका व करंगळी यांच्या सहाय्याने मिळून वाजवतात.

(५) **र अथवा ट :** तीरकीट मधील र आणि तीट मधील ट हा बोल वाजवताना उजव्या हाताच्या तर्जनीने शाईच्या मध्यावर आघात केल्यावर र किंवा ट बोल वाजवला जातो.

### ६.२ डग्ग्यावर वाजवले जाणारे बोल

(१) **ग अथवा घ :** डाव्या हाताचे मनगट शाईच्या अलिकडे ठेऊन तर्जनीने शाईच्या पुढे व चाटीच्या अलिकडे जो मैदानाचा भाग असतो त्यावर आघात करून ग अथवा घ हा बोल वाजवला जातो.

वरील प्रमाणेच मध्यमा व अनामिका एकत्र जोडून शाईच्या पुढे व चाटीच्या अलिकडे जो मैदानाचा भाग असतो त्यावर आघात करून ग अथवा घ हा बोल वाजवला जातो.

(२) **क, की, के, कत :** डाव्या हाताच्या पाच बोटांना जोडून पूर्ण हाताच्या तळव्याने डग्ग्याच्या मैदानावर मनगट शाईच्या अलिकडे ठेऊन आघात केल्यानंतर क, की, के , कत हा बोल वाजवला जातो.

## ६.३ संयुक्तरित्या वाजवले जाणारे बोल

(१) **धा :** डग्याच्या मैदानावर डाव्या हाताच्या मनगटाने दाब देऊन मध्यमा किंवा तर्जनीने आघात करून घ हा बोल वाजले त्याच वेळी उजव्या हाताच्या तर्जनीने तबल्याच्या चाटीवर ता अथवा ना हा बोल एकत्र वाजविल्यास `धा` हा संयुक्त बोल वाजतो.

(२) **धीं :** तबल्यावर उजव्या हाताच्या तर्जनीने शाई व लवेच्याजवळ आघात केल्यास ती किंवा ती हा बोल वाजेल त्याच वेळी डाव्या हाताने डग्यावर मनगटाने शाईच्याजवळ दाब देऊन सर्व बोटांचा गोलाकार करून तर्जनी अथवा मध्यमाने डग्याच्या लवेवर आघात केल्यास ग अथवा घ वाजेल या दोन्ही क्रियांचा मिळून धीं हा बोल वाजवला जातो.

## ६.४ मिश्र वाजवले जाणारे बोल

(१) **तीरकीट :** तबल्यावर उजव्या हाताच्या मध्यमा व अनामिका या दोन्ही बोटांनी शाईच्या मध्यभागी आघात केल्यावर ती हा बोल, त्याच प्रमाणे तर्जनीने शाईच्या मध्यभागी आघात केल्यावर र हा बोल, डग्यावर डाव्या हाताच्या संपूर्ण पंजाने मैदान, शाई, लवेवर आघात केल्यास की हा बोल, तसेच ती या बोलाप्रमाणे ट हा बोल वाजवणे अशा पद्धतीने तीरकीट हा बोल वाजवला जातो.

(२) **कीटतक :** डग्यावरील डाव्या हाताच्या मनगटापासून संपूर्ण पंजाने आघात करून की हा बोल, तबल्याच्या शाईच्या मध्यभागी मध्यमा व अनामिकेने ट हा बोल, तसेच तबल्यावर शाईच्या मध्यावर तर्जनीने आघात केल्यास ते आणि की प्रमाणे क हा बोल वाजेल अशा पध्दतीने कीटतक हा बोल वाजवला जातो.

(३) **त्रक :** तबल्याच्या शाईवर मध्यभागी करंगळी, अनामिका, मध्यमा यांचा एकत्रित पहिला आघात आणि त्याला जोडून तर्जनीच्या पेराने आघात अशा संयुक्त आघाताने त्र हा बोल वाजतो चारी बोटे जूळवून पुन्हा तबल्याच्या शाईवर आघात करून त्याचवेळी डग्यावरील क हा बोल वाजतो म्हणजेच त्रकमधील क हा बोल वाजतो. फक्त मध्यमा व तर्जनीने ही त्रक हा बोल वाजवण्याची पध्दतही प्रचलित आहे.

## माझा अभ्यास

### प्र. १ फरक स्पष्ट करा

१. धा – धीं   २. तीरकीट – कीटतक

### प्र. २ रिकाम्या जागा भरा.

१. ना हा बोल फक्त ........ वर वाजवला जातो.

२. ग हा बोल फक्त .......... वर वाजवला जातो.

३. मिश्र बोलामध्ये ........ या बोलांचा समावेश होतो.

४. तबल्यावर शाई व लवेच्या जवळ आघात केल्यास ........ हा बोल वाजवला जातो.

५. डाव्या हाताच्या तळव्याने डग्याच्या मैदानावर आघात करण्यामुळे ...... हा बोल वाजवला जातो.

### प्र. ३ त्रक या मिश्र बोलाची वादनपध्दती लिहा

### प्र. ४ तबला डग्गा यांचे चित्र काढून विविध बोल कोणत्या ठिकाणी वाजवतात ते दाखवा.

## घटक ७ ताल परिचय व लिपीबध्द

यामध्ये अभ्यासक्रमातील तालांचा परिचय व ताल एकपटमध्ये लिपीबध्द करणे, याबद्दल माहिती घेऊ.

### ७.१ ताल परिचय

#### ७.१.१ ताल – दादरा

मात्रा – ६

विभाग – २ (३-३ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – १ (पहिल्या मात्रेवर)

काल – १ (चौथ्या मात्रेवर)

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ठेका – | धा | धी | ना | धा | ती | ना |
| चिन्ह – | × | | | ० | | |

#### ७.१.२ ताल – केहरवा (केरवा)

मात्रा – ८

विभाग – २ (४-४ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – १ (पहिल्या मात्रेवर)

काल – १ (पाचव्या मात्रेवर)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| ठेका – | धा | गे | न | ती | न | क | धी | न |
| चिन्ह – | × | | | | ० | | | |

#### ७.१.३ ताल – रुपक

मात्रा – ७

विभाग – ३ (३-२-२ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – २ (४ व ६ व्या मात्रांवर)

काल – १ (पहिल्या मात्रेवर)     (सम व काल एकाच मात्रेवर आहे.)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ठेका – | ती | ती | ना | धी | ना | धी | ना |
| चिन्ह – | ० | | | १ | | २ | |

### ७.१.४ ताल – झपताल

मात्रा – १०

विभाग – ४ (२-३, २-३ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – ३ (१, ३, ८ व्या मात्रांवर)

काल – १ (सहाव्या मात्रेवर)

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| ठेका – | धी | ना | धी | धी | ना | ती | ना | धी | धी | ना |
| चिन्ह – | × | | २ | | | ० | | ३ | | |

### ७.१.५ ताल – त्रिताल

मात्रा – १६

विभाग – ४ (४-४ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – ३ (१, ५, १३ व्या मात्रांवर)

काल – १ (नवव्या मात्रेवर)

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ठेका – | धा | धीं | धीं | धा | धा | धीं | धीं | धा | धा | तीं | तीं | ता | ता | धीं | धीं | धा |
| चिन्ह – | × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

### ७.१.६ ताल – तेवरा

मात्रा – ७

विभाग – ३ (३-२-२ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – ३ (एक, चार, सहाव्या मात्रेवर)

काल – या तालात काल नाही.

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ठेका – | धा | दिं | ता | तीट | कत | गदी | गन |
| चिन्ह – | × | | | २ | | ३ | |

### ७.१.७ ताल – चौताल

मात्रा – १२

विभाग – ६ (२-२-२-२-२-२ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी– ४ (१, ५, ९,११ व्या मात्रेवर)

काल – २ (३ व ७ व्या मात्रेवर )

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| ठेका – | धा | धा | दिं | ता | तीट | धा | दिं | ता | तीट | कत | गदी | गन |
| चिन्ह – | × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

## माझा अभ्यास

### प्र. १ जोड्या जुळवा.

| अ.क्र. | तालाच्या मात्रा | | ताल |
|---|---|---|---|
| १ | १२ | | तेवरा |
| २ | १० | | केरवा |
| ३ | ६ | | झपताल |
| ४ | ८ | | दादरा |
| ५ | ७ | | चौताल |

### प्र २ रिकाम्या जागा भरा.

(१) झपतालमध्ये टाळी ......, ......, ...... या मात्रेवर आहे.

(२) दादरा तालाचे विभाग ....... आहेत.

(३) ४-४ मात्रांचे समान भाग असणारा ताल ............ आहे.

(४) .......... या तालात पहिल्या मात्रेवर काल आहे.

(५) .......... या तालात खाली नाही.

### प्र २ तालाचे चक्र तयार करून तालाची माहिती लिहा.

# घटक ८ तालवादकांची जीवनचरित्रे

## ८.१ उ. अमीर हुसेन खाँ :

**जन्म व शिक्षण :**

१८९९ साली मेरठ जिल्ह्यातील बनखंडा येथे खाँ साहेबांचा जन्म झाला. तबला वादनाच्या शिक्षणाची सुरुवात वडिल उ. अहमद बक्षखाँ यांच्याकडे केली. यांचे बालपणाचे वास्तव्य हैद्राबाद येथे होते. त्यानंतर त्यांचे मामा उ. मुनीर खाँ यांच्याकडे त्यांनी बरीच वर्षे तालीम घेतली. १९१४ साली त्यांनी मुंबईला कायम राहण्याचा निश्चय केला.

**वादन वैशिष्ट्ये :**

दररोज कित्येक तास केलेला रियाज, त्यावरील चिंतन, मनन तसेच गुरुंकडून मिळालेले सर्व घराण्याचे शिक्षण यामुळे प्रत्येक बोल स्पष्ट, खणखणीत, आसदार असे खाँसाहेबांचे वादन होते. कायदे, गत तुकडे, चक्रदार इत्यादी सर्व प्रकारच्या रचनांची खाँसाहेबांनी स्वतः निर्मिती केली आहे. मिश्र जातीतील कायदे, रेले यासोबत पंजाबी चाले देखील अप्रतिम तयार केले आहेत. दोन बोटांचे धिरधिर खाँसाहेब अतिशय तयारीने वाजवत. दायाँ बायाँ संतुलन श्रवणीय होते.

खाँसाहेब उत्कृष्ट वादक तर होतेच शिवाय एक आदर्श गुरु आणि रचनाकार होते. त्यामुळे बजायक, बनायक, बतायक अशा तिन्हीं गुणांनी ते परिपूर्ण होते. चांगली शेरोशायरी त्यांना मुखोदगत होती. १९६१ साली गांधर्व महाविद्यालय मंडळाने त्यांचा विशेष पुरस्कार देऊन सत्कार केला होता.

**शिष्यवर्ग :**

पं. अरविंद मुळगांवकर, गोपाळराव वाडेगांवकर, पांडूरंग साळुंखे, पंढरीनाथ नागेश्वर, बाबासाहेब मिरजकर, डॉ. आबान मिस्त्री, उ. गुलाम रसूल खाँ आणि पुत्र फकीर हुसेन खाँ या शिष्यांनी खाँसाहेबांचे नाव आपल्या वादनाने अजरामर केले आहे.

अशा या महान कलाकाराचे निधन ५ जानेवारी १९६९ रोजी झाले.

## ८.२ नानासाहेब पानसे :

**जन्म व शिक्षण :**

नानासाहेब पानसे यांचा जन्म महाराष्ट्रातील सातारा जिल्ह्यातील वाई जवळील बावधन या गावात झाला. पखवाज वादनाच्या शिक्षणाची सुरुवात त्यांनी वडिलांकडे केली. घरी किर्तनाची परंपरा असल्यामुळे कीर्तनाच्या साथीला नानासाहेब पखवाज वाजवू लागले. त्यानंतर पुढे पुण्याचे मान्याबा कोतडीकर, चोंडेबुवा, मार्तंडबुवा, बाबू जोधसिंह आणि योगिराज माधव स्वामी यांच्याकडे शिक्षण घेतले. काही जणांच्या मते पानसे नावाची कीर्तन मंडळी पखवाजवादन करीत असत त्यामुळे त्यांना नाना पानसे म्हणू लागले.

पखवाज

**वादन वैशिष्ट्ये :**

प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथांचा अभ्यास करून गणिती आधारावर अनेक तालांचे नवनवीन ठेके नाना साहेबांनी निर्माण केले. अनेक नवीन प्रकारच्या परणांची रचना केली. नानासाहेबांच्या स्वभावानुसार त्यांची वादनशैलीदेखील सरळ, नाजूक, मधूर होती. त्यांच्या वादनात लय-लयकारीचा उपयोग साहजिकच दिसून येतो. आडी लय आणि तीन तीन शब्दसमूहांची बोलरचना हे त्यांच्या वादनात वारंवार दिसून येते. पखवाजाचे शिक्षण सुलभ व्हावे म्हणून मात्रा मोजण्याच्या पद्धतीवर जोर दिला. धिरधिरकीटतक, धुमकिट, धडनग, तगन, गदिगन, तकतक या बोलांचा समावेश असलेल्या रचना अतिशय तयारीने वाजवत असत. त्यांनी सुदर्शन नावाचा ताल तयार केला.

**शिष्यवर्ग :**

पं. सखारामबुवा आगले, वामनराव चदवडकर, बलवंतराव वैद्य, शंकरराव अलगुटकर, महाराज भाऊसाहेब, गोविंदराव राजवैद्य, बलवंतराव पाटवे इत्यादी शिष्य नामांकित आहेत. याशिवाय मुलगा बलवंतराव व नातू शंकरभैया पानसे हे देखील प्रसिद्ध होते.

वरील शिष्यांचे शिष्यांमध्ये अंबादासपंत आगले, गोविंदराव बऱ्हानपूरकर, बाबूराव गोखले, नारायणराव कोळी, अर्जुन शेजवळ, विनायक धांधलेकर इत्यादी पखवाजवादक उल्लेखनीय आहेत. संगीतातील जाणकारांच्या मते नानासाहेब पानसे यांचे निधन १९ व्या शतकाच्या शेवटी झाले.

## माझा अभ्यास

**प्र. १ रिकाम्या जागा भरा.**

(१) उ. अमीर हुसेन खाँ यांचा जन्म .......... येथे झाला.

(२) उ. अमीर हुसेन खाँ यांच्या गुरुंचे नाव .......... होय.

(३) .......... हे उत्तम रचनाकार होते.

(४) नानासाहेब पानसे यांचा जन्म .......... येथे झाला.

(५) .......... यांच्या घरी कीर्तनाची परंपरा होती.

## ४ तालवाद्य (प्रात्यक्षिक)

| अ.क्र. | घटक | उप घटक |
|---|---|---|
| १ | तबला व डग्ग्यावर वाजवले जाणारे विविध वर्ण आणि त्यांची वादन पद्धती<br>( हा भाग तालवाद्य तात्विक मध्ये दिला आहे.) | १.१ तबल्यावर वाजवले जाणारे विविध वर्ण<br>१.२ डग्ग्यावर वाजवले जाणारे विविध वर्ण<br>१.३ संयुक्तरित्या वाजवले जाणारे वर्ण<br>१.४ मिश्र वाजवले जाणारे वर्ण |
| २ | ताल परिचय<br>(हा भाग तालवाद्य तात्विक मध्ये दिला आहे.) | २.१ दादरा<br>२.२ केरवा<br>२.३ रूपक<br>२.४ झपताल<br>२.५ तीनताल<br>२.६ तेवरा<br>२.७ चौताल |
| ३ | तालांचे प्रात्यक्षिक वादन व पढंत करणे | घटक क्र. २ मधील सर्व तालाचे वादन व पढंत करणे (एकपट लय) |
| ४ | तबला वादन | ४.१ कायदा (त्रिताल)<br>४.२ मुखडा (त्रिताल)<br>४.३ टुकडा (त्रिताल)<br>४.४ मोहरा (त्रिताल)<br>४.५ तिहाई (त्रिताल)<br>४.६ किस्म – (ताल – झपताल मधील दोन किस्म)<br>४.७ तिहाई – (ताल – झपताल मध्ये समेपासून समेपर्यंतएक तिहाई) |
| ५ | व्याख्या<br>(हा भाग तालवाद्य तात्विक मध्ये दिला आहे.) | ५.१ मात्रा ५.६ आवर्तन<br>५.२ लय ५.७ सम<br>५.३ ताल ५.८ टाळी<br>५.४ बोल ५.९ काल<br>५.५ ठेका ५.१० विभाग |
| ६ | ताल लिपीबद्ध करणे | घटक क्र २ मधील ताल लिपीबद्ध करणे. |
| ७ | प्रात्यक्षिक नोंदवही | प्रात्यक्षिकांची नोंद करणे. |

## घटक ३ – (घटक क्र. २ मधील प्रात्यक्षिक वादन व पढंत करणे.) घटक ४ – तबला वादन

### ४.१ कायदा (त्रिताल)

| | | | |
|---|---|---|---|
| धा धा ती ट | धा धा तू ना | ता ता ति ट | धा धा धीं ना |
| × | २ | ० | ३ |

**पलटा नं १**

| | | | |
|---|---|---|---|
| धा धा ती ट | धा धा ती ट | धा धा ती ट | धा धा तू ना |
| × | २ | ० | ३ |
| ता ता ति ट | ता ता ति ट | धा धा ती ट | धा धा धीं ना |
| × | २ | ० | ३ |

**पलटा नं २**

| | | | |
|---|---|---|---|
| धा धा ती ट | ती ट ती ट | धा धा ती ट | धा धा तू ना |
| × | २ | ० | ३ |
| ता ता ति ट | ति ट ति ट | धा धा ती ट | धा धा धीं ना |
| × | २ | ० | ३ |

**तिहाई**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| धा धा ती ट | धा धा तू ना | धा ऽ ऽ ऽ | धा धा ती ट | |
| × | २ | ० | ३ | |
| धा धा तू ना | धा ऽ ऽ ऽ | धा धा ती ट | धा धा तू ना | धा |
| × | २ | ० | ३ | × |

### ४.२ मुखडा (त्रिताल)

| | | |
|---|---|---|
| धा धीं धीं धा | धा धीं धीं धा | |
| × | २ | |
| धा तीं तीं ता | कत धागे नधा गेन | धा |
| ० | ३ | × |

### ४.३ मुखडा (त्रिताल)

| | | |
|---|---|---|
| धागे तीट तागे तीट | धागे तीट तागे तीट | |
| × | २ | |
| कत् तीट धागे तीट | कत धाऽ नधा ऽन | धा |
| ० | ३ | × |

### ४.४ मोहरा (त्रिताल)

| | | |
|---|---|---|
| धा धीं धीं धा | धा धीं धीं धा | |
| × | २ | |
| किटतक तिरकीट तकतक तिरकीट | धाऽऽऽ तिरकीट तकतक तिरकीट | धा |
| ० | ३ | × |

### ४.५ तिहाई (त्रिताल)

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कत | धाऽ | नधा | ऽन | धाऽ | ऽऽ | कत | धाऽ | |
| × | | | | २ | | | | |
| नधा | ऽन | धाऽ | ऽऽ | कत | धाऽ | नधा | ऽन | धा |
| ० | | | | ३ | | | | × |

### ४.६ दोन किस्म (झपताल)

(१)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धी | नाना | धी | धी | नाना | |
| × | | २ | | | |
| ती | नाना | धी | धी | नाना | धी |
| ० | | ३ | | | × |

(२)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| धी | नाना | धीं | धागे | तीट | |
| × | | २ | | | |
| ती | नाना | धीं | धागे | तीट | धी |
| ० | | ३ | | | × |

### ४.७ तिहाई (झपताल)

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| तीटधाऽ | नधाऽन | धाऽऽऽ | ऽऽऽऽ | तीटधाऽ | |
| × | | २ | | | |
| नधाऽन | धाऽऽऽ | ऽऽऽऽ | तीटधाऽ | नधाऽन | धी |
| ० | | ३ | | | × |

## घटक ६ ताल लिपीबद्ध करणे

हा भाग तालवाद्य तात्विक मध्ये दिला आहे.

## घटक ७ प्रात्यक्षिक नोंद वही

प्रात्यक्षिकांची नोंद करणे.

# परिशिष्ट (ताल परिचय)

१ **ताल – त्रिताल (तिनताल)**

मात्रा – १६

विभाग – ४ (४–४ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – ३ (१, ५, १३ व्या मात्रांवर)

काल – नवव्या मात्रेवर

| | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| ठेका – | धा | धीं | धीं | धा | धा | धीं | धीं | धा | धा | तीं | तीं | ता | ता | धीं | धीं | धा |
| चिन्ह – | × | | | | २ | | | | ० | | | | ३ | | | |

उपयोग : हा ताल शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीतासाठी उपयुक्त आहे.

२ **ताल – झपताल**

मात्रा – १०

विभाग – ४ (२–३ – २–३ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – ३ (१, ३, ८ व्या मात्रांवर)

काल – सहाव्या मात्रेवर

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० |
| ठेका – | धी | ना | धी | धी | ना | ती | ना | धी | धी | ना |
| चिन्ह – | × | | २ | | | ० | | ३ | | |

उपयोग : शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत यासाठी हा ताल उपयुक्त आहे.

३ **ताल – दादरा**

मात्रा – ६

विभाग – २ (३–३ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – १ (पहिल्या मात्रेवर)

काल – चौथ्या मात्रेवर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| ठेका – | धा | धी | ना | धा | ती | ना |
| चिन्ह – | × | | | ० | | |

उपयोग : हा ताल सुगम व उपशास्त्रीय संगीतासाठी उपयुक्त आहे.

## ४ ताल – केरवा (केहरवा)

मात्रा – ८

विभाग – २ (४–४ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – १ (पहिल्या मात्रेवर)

काल – पाचव्या मात्रेवर

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| ठेका – | धा | गे | न | ती | न | क | धी | न |
| चिन्ह – | × | | | | ० | | | |

उपयोग : हा ताल सुगम व उपशास्त्रीय संगीतासाठी उपयुक्त आहे.

## ५ ताल – रूपक

मात्रा – ७

विभाग – ३ (३–२–२ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – २ (४ व ६ व्या मात्रांवर)

काल – पहिल्या मात्रेवर (सम व काल एकाच मात्रेवर आहे.)

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| ठेका – | ती | ती | ना | धी | ना | धी | ना |
| चिन्ह – | ० <br> × | | | १ | | २ | |

उपयोग : हा ताल सुगम व शास्त्रीय संगीतासाठी उपयुक्त आहे.

## ६ ताल – एकताल

मात्रा – १२

विभाग – ६ (२–२ मात्रांचे)

सम – १ (पहिल्या मात्रेवर)

टाळी – ४ (१, ५, ९, ११ व्या मात्रांवर)

काल – २ (३ व ७ व्या मात्रेवर)

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा – | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| ठेका – | धीं | धीं | धागे | त्रक | तू | ना | क | त्ता | धागे | त्रक | धी | ना |
| चिन्ह – | × | | ० | | २ | | ० | | ३ | | ४ | |

उपयोग : हा ताल सुगम व शास्त्रीय संगीतासाठी उपयुक्त आहे.

## माझा अभ्यास

खालील तक्ता पूर्ण करा.

| | त्रिताल | झपताल | दादरा | केरवा | रूपक | एकताल |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मात्रा | | | | | | |
| खंड | | | | | | |
| सम | | | | | | |
| काल | | | | | | |
| टाळी | | | | | | |